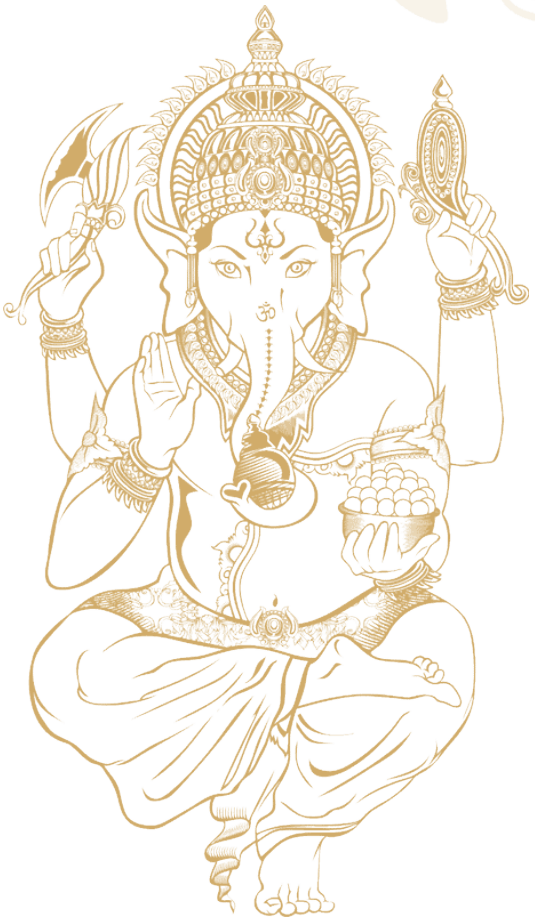

AJIT POWAR

22 Jul 1959

01:52 PM

Deolali

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 121476501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**22/07/1959**
दिवस	बुधवार
जन्म समय	**13:52:00 कला**
इष्ट	19:25:10 घटी
स्थान	**Deolali**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:58:00 उत्तर
रेखांश	73:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:24 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	13:17:36 कला
वेलान्तर	-00:06:18 कला
साम्पातिक वेल	09:14:58 कला
सूर्योदय	06:05:56 कला
सूर्यास्त	19:15:21 कला
दिनमान	13:09:26 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	05:29:54 कर्क
लग्नाचे अंश	21:47:32 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	तुला – शुक्र
राशि–स्वामी	**कुम्भ – शनि**
नक्षत्र–चरण	**धनिष्ठा – 4**
नक्षत्र स्वामी	मंगळ
योग	आयुष्मान
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मांजर
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गे–गैरिक
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1881	आषाढ़	31
पंजाबी	संवत : 2016	श्रावण	7
बंगाली	सन् : 1366	श्रावण	6
तमिल	संवत : 2016	अदी	6
केरल	कोल्लम : 1134	काभकतका	6
नेपाली	संवत : 2016	श्रावण	7
चैत्रादी	संवत : 2016	श्रावण	कृष्ण 3
कार्तिकादी	संवत : 2016	आषाढ़	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 3
तिथि समाप्ति वेल _____: 27:43:25
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 18:06:28 कला
जन्म योग _____: धनिष्ठा
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 14:14:52 कला
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय समयी करण _____: वणिज
करण समाप्ति वेल _____: 16:12:04 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 47:41:20
भभोग _____: 58:17:29
भोग्य दशा वेल _____: मंगळ 1 वर्ष 3 मा 2 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: उंदीर
लग्न _____: मिथुन
रवि _____: वृषभ
चन्द्र _____: धनु
मंगळ _____: मिथुन
बुध _____: वृषभ
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

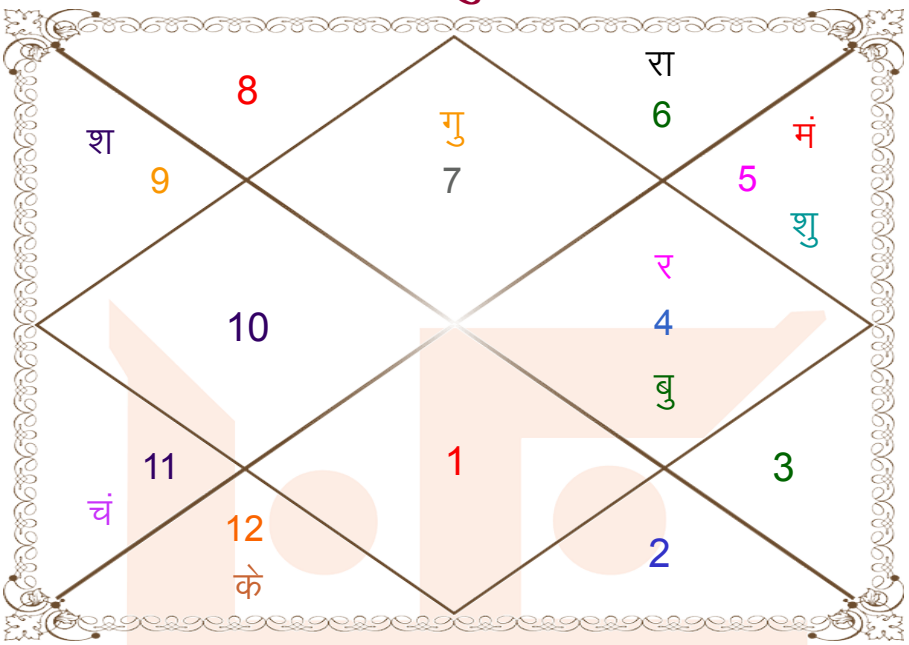

चन्द्र कुंडली

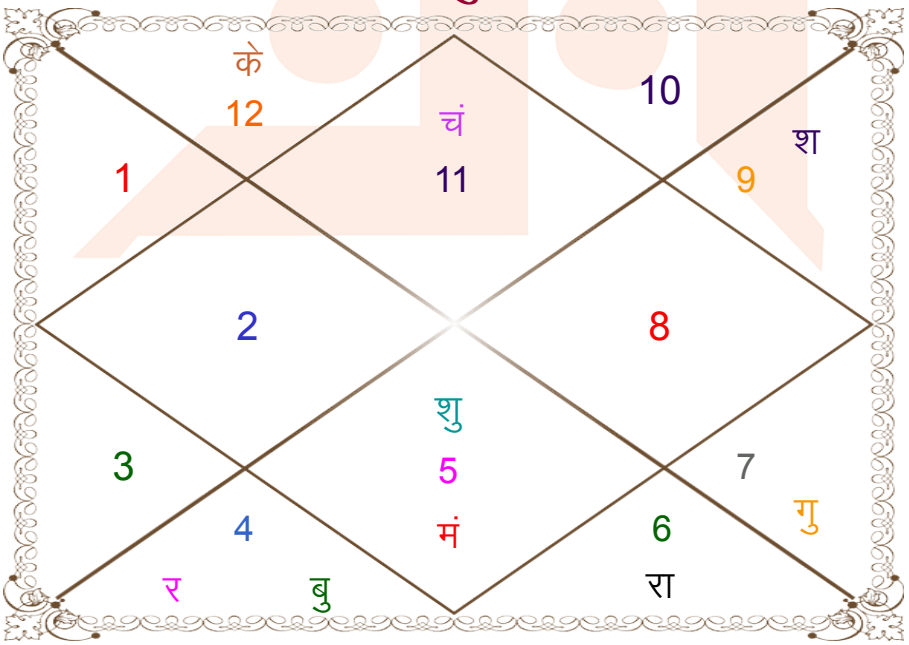

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

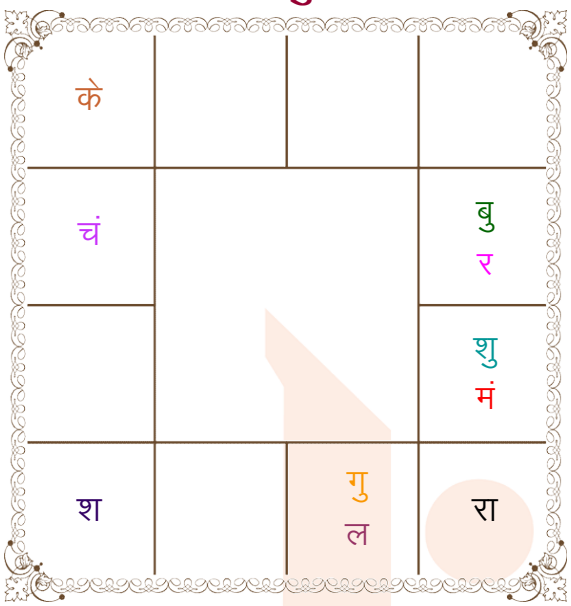

लग्न कुंडली

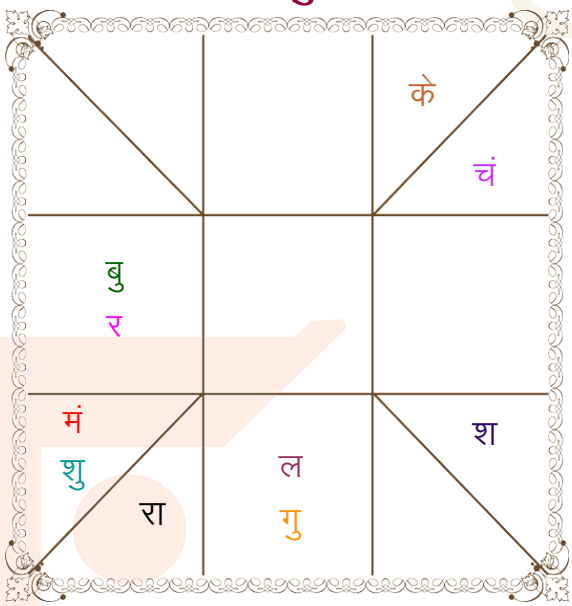

विंशोत्तरी
मंगळ 1वर्ष 3मा 2दि

मंगळ

22/07/1959

24/10/2073

मंगळ	23/10/1960
राहु	24/10/1978
गुरु	24/10/1994
शनि	24/10/2013
बुध	24/10/2030
केतु	24/10/2037
शुक्र	24/10/2057
रवि	24/10/2063
चन्द्र	24/10/2073

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 4मा 9दि

संकटा

30/11/2020

30/11/2028

संकटा	10/09/2022
मंगळा	30/11/2022
पिंगला	11/05/2023
धान्या	10/01/2024
भ्रामरी	30/11/2024
भद्रिका	09/01/2026
उल्का	11/05/2027
सिद्धा	30/11/2028

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	21:47:32	324:20:23	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	———
सूर्य			कर्क	05:29:54	00:57:16	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			कुंभ	04:16:15	13:35:43	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगळ	शुक्र	सम राशि
मंगळ			सिंह	07:52:37	00:37:12	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मित्र राशि
बुध			कर्क	26:03:52	00:02:36	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
गुरु			तुला	28:50:16	00:00:22	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	16:30:08	00:35:03	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
शनि	व		धनु	08:39:20	00:03:41	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
राहु	व		कन्या	12:57:33	00:06:05	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	12:57:33	00:06:05	उ.भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष			कर्क	22:14:42	00:03:36	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	———
नेप			तुला	10:54:06	00:00:11	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	———
प्लूटो			सिंह	09:28:28	00:01:43	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	———
दशम भाव			कर्क	22:59:33	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	चंद्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:17:35

लग्न–चलित

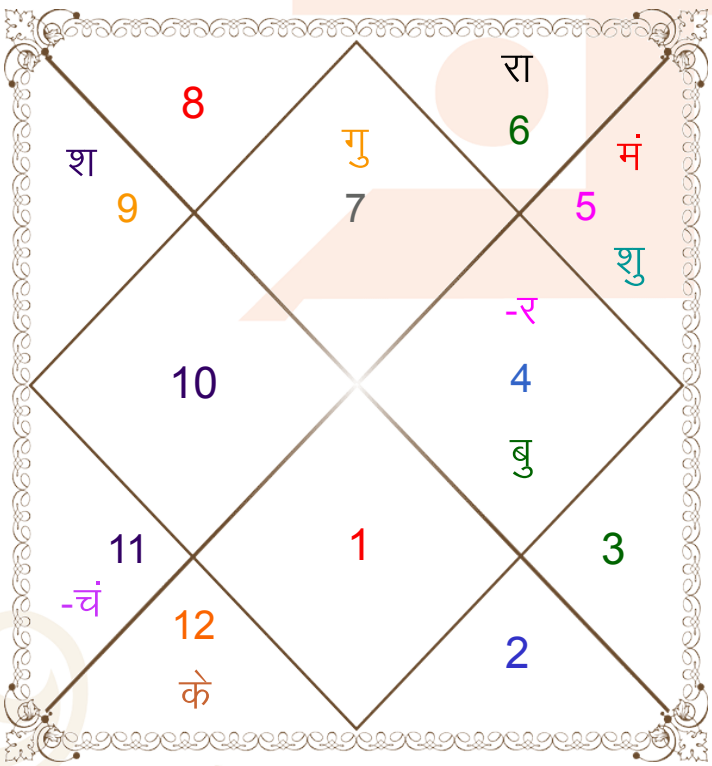

चन्द्र कुंडली

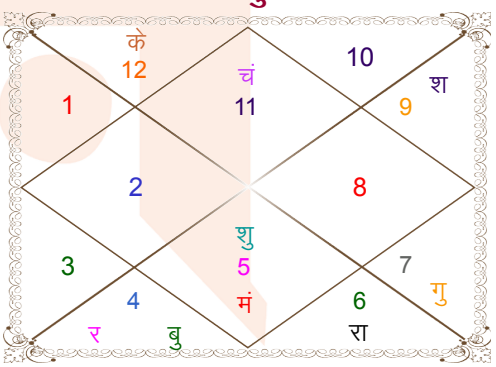

नवमांश कुंडली

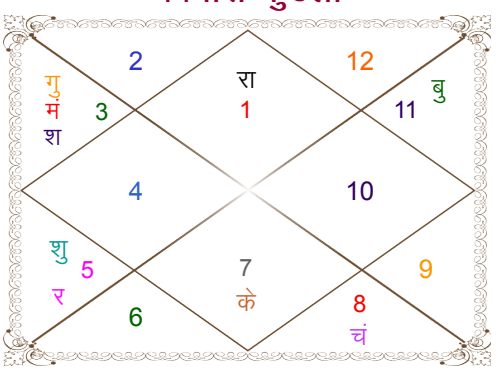

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	06:59:32	तुला	21:47:32
2	वृश्चिक	06:59:32	वृश्चिक	22:11:32
3	धनु	07:23:32	धनु	22:35:32
4	मकर	07:47:33	मकर	22:59:33
5	कुम्भ	07:47:33	कुम्भ	22:35:32
6	मीन	07:23:32	मीन	22:11:32
7	मेष	06:59:32	मेष	21:47:32
8	वृषभ	06:59:32	वृषभ	22:11:32
9	मिथुन	07:23:32	मिथुन	22:35:32
10	कर्क	07:47:33	कर्क	22:59:33
11	सिंह	07:47:33	सिंह	22:35:32
12	कन्या	07:23:32	कन्या	22:11:32

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	21:47:32
2	वृश्चिक	21:00:30
3	धनु	21:17:42
4	मकर	22:59:33
5	कुम्भ	25:04:20
6	मीन	25:07:18
7	मेष	21:47:32
8	वृषभ	21:00:30
9	मिथुन	21:17:42
10	कर्क	22:59:33
11	सिंह	25:04:20
12	कन्या	25:07:18

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

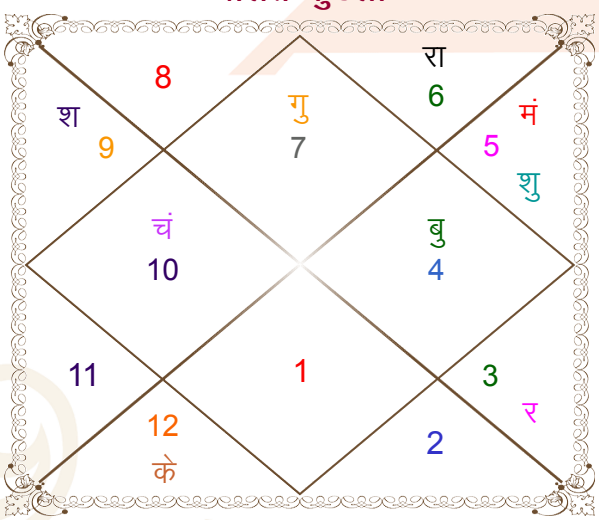

भाव कुंडली

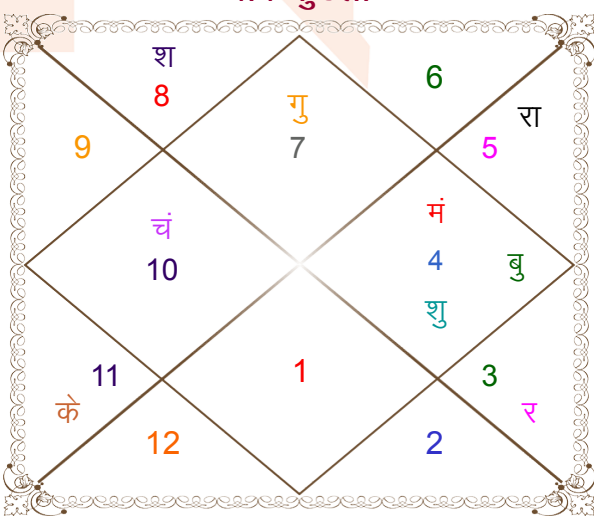

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	मृत	मुदित	गमन	5.25	48 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	शक्त	भोजन	5.48	34 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	कुमार	मुदित	सभा	0.37	64 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल	खल	शयन	1.46	80 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	खल	शयन	2.57	57 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	युवा	खल	सभा	1.80	35 %
शनि	मातृ	आयुष्य	कुमार	शक्त	प्रकाश	4.38	62 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	स्वस्थ	भोजन	0.00	62 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	स्वस्थ	शयन	0.00	62 %
एकुण						**21.30**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

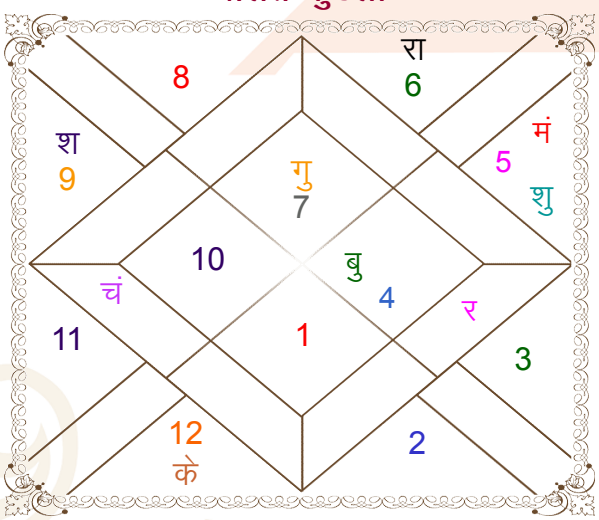

लग्न–चलित

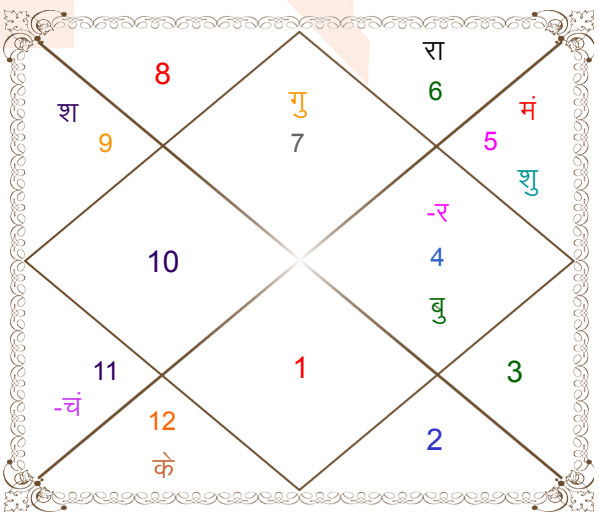

सुदर्शन चक्र

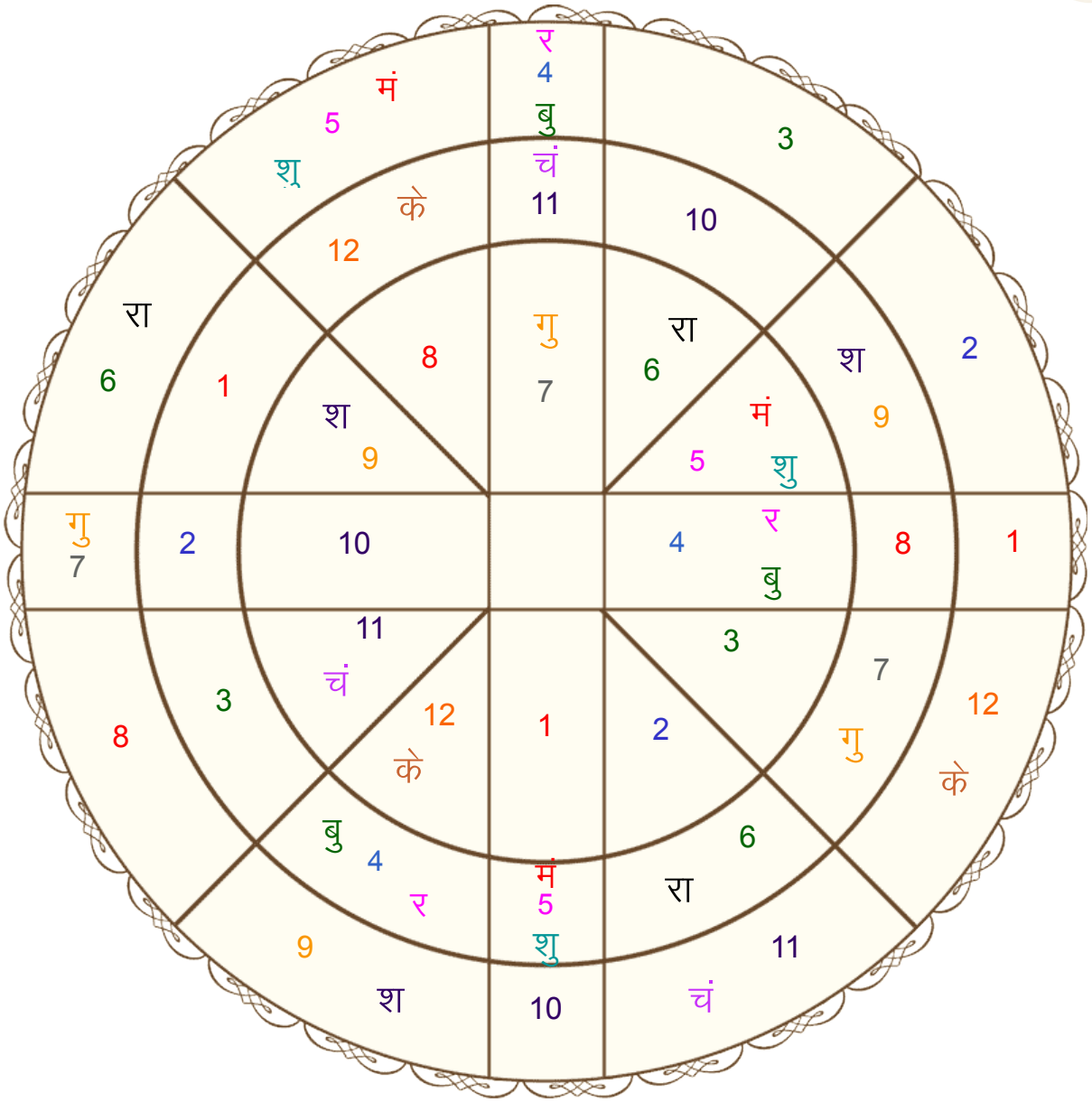

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहेरील वृत्ता पासून अन्तर वृत्ता पर्यंत रवि, चन्द्र व जन्मागं कुंडली मधील ग्रहांची तुलनात्मक स्थिती दर्शावित आहे. कोणत्या ही भावाचा विचार करन्या साठी त्या भावाला प्रकट करनारया तीनी राशिचां विचार करावा.

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा वेल : मंगळ 1 वर्ष 2 महिना 13 दिवस

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	05:36:01	चंद्र	शनि	बुध	बुध
चंद्र		कुंभ	04:22:22	शनि	मंगळ	शुक्र	शनि
मंगळ		सिंह	07:58:44	सूर्य	केतु	गुरु	शनि
बुध		कर्क	26:09:59	चंद्र	बुध	गुरु	गुरु
गुरु		तुला	28:56:23	शुक्र	गुरु	सूर्य	राहु
शुक्र		सिंह	16:36:15	सूर्य	शुक्र	चंद्र	गुरु
शनि	व	धनु	08:45:27	गुरु	केतु	गुरु	सूर्य
राहु	व	कन्या	13:03:40	बुध	चंद्र	राहु	केतु
केतु	व	मीन	13:03:40	गुरु	शनि	राहु	राहु
हर्ष		कर्क	22:20:49	चंद्र	बुध	चंद्र	मंगळ
नेप		तुला	11:00:13	शुक्र	राहु	शनि	बुध
प्लूटो		सिंह	09:34:35	सूर्य	केतु	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	21:53:39	शुक्र	गुरु	शनि	शनि
2	वृश्चि	21:06:38	मंगळ	बुध	शुक्र	शनि
3	धनु	21:23:49	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
4	मक	23:05:40	शनि	चंद्र	सूर्य	बुध
5	कुंभ	25:10:27	शनि	गुरु	बुध	राहु
6	मीन	25:13:25	गुरु	बुध	राहु	बुध
7	मेष	21:53:39	मंगळ	शुक्र	शनि	शनि
8	वृष	21:06:38	शुक्र	चंद्र	शुक्र	चंद्र
9	मिथु	21:23:49	बुध	गुरु	गुरु	चंद्र
10	कर्क	23:05:40	चंद्र	बुध	चंद्र	शुक्र
11	सिंह	25:10:27	सूर्य	शुक्र	बुध	राहु
12	कन्या	25:13:25	बुध	मंगळ	राहु	बुध

के.पी. अयनांश : 23:11:28

फॉरच्युना : वृषभ 20:40:01

लग्न कुंडली

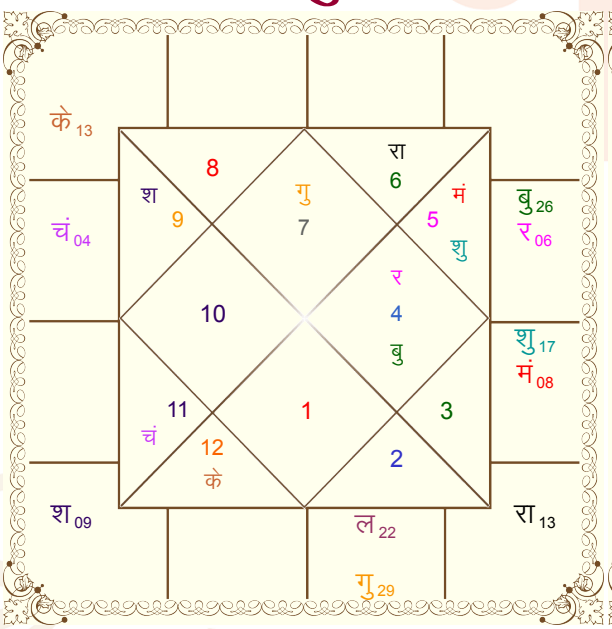

भाव कुंडली

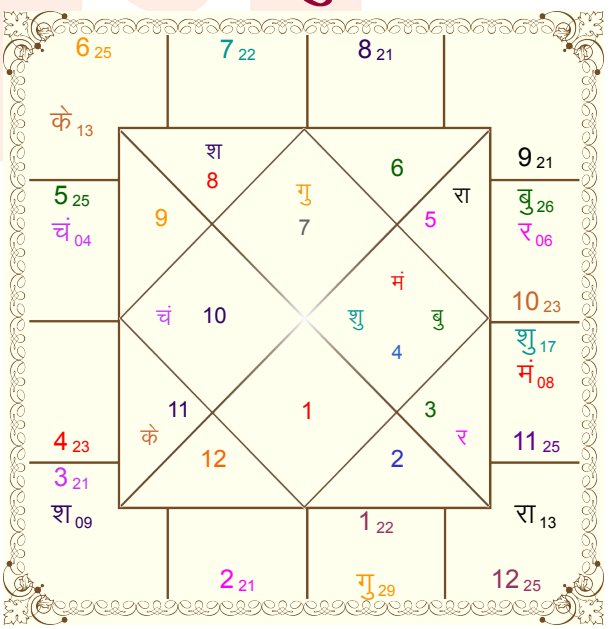

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु+ शुक्र,
2	सूर्य, चंद्र– मंगळ– शनि, केतु,
3	गुरु,
4	सूर्य– चंद्र, शनि– राहु, केतु–
5	सूर्य– मंगळ, शनि+ केतु+
6	गुरु,
7	चंद्र– मंगळ–
8	शुक्र,
9	सूर्य, बुध,
10	चंद्र+ मंगळ, बुध+ शुक्र+ राहु–
11	सूर्य– राहु,
12	बुध,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2, 4- 5- 9, 11-
चंद्र	2- 4, 7- 10+
मंगळ	2- 5, 7- 10,
बुध	9, 10+ 12,
गुरु	1+ 3, 6,
शुक्र	1, 8, 10+
शनि	2, 4- 5+
राहु	4, 10- 11,
केतु	2, 4- 5+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगळ
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न चा विस्तार होत आहेत. प्रत्येक कुंडली चा एक विशेष लक्ष्य होत आहेत, खालील पत्रिका मदी वर्णन दिले आहेत. हे कुंडलिया कुटला विषय चा प्रतिनिधित्व करते ते आपण समझु शकते. हे चा अध्ययन मूल जन्मपत्रिका बरोबर केला पाहिजे. पूर्ण लक्ष देउन हे पत्रिकाचा अभ्यास करायचे, कारण ईथे ग्रहांची दृष्टि नाहीं होती. साधारणपणे ग्रहांचा आचरण ते राशि चा भाव पर्यंत सिमित राहतो, ते हे वर्गीय पत्रिकेत स्थित आहे.

रवि कुंडली

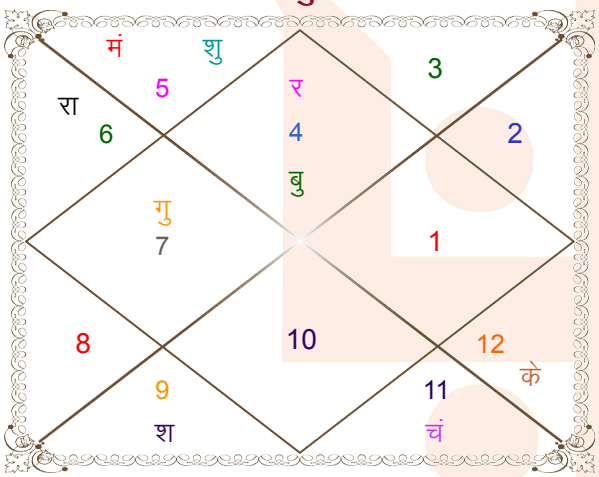

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

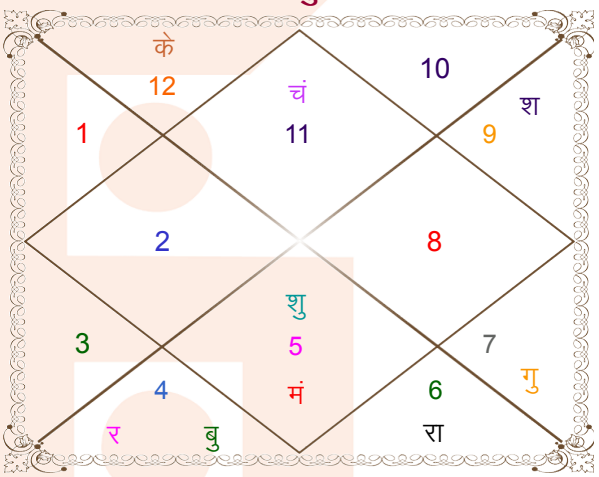

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

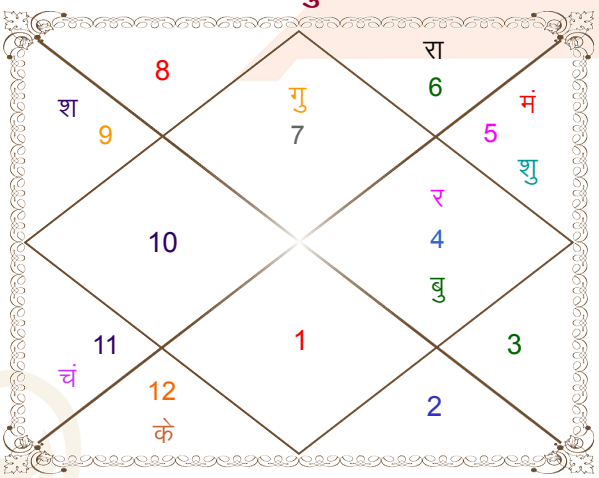

देह विचारः

होरा कुंडली

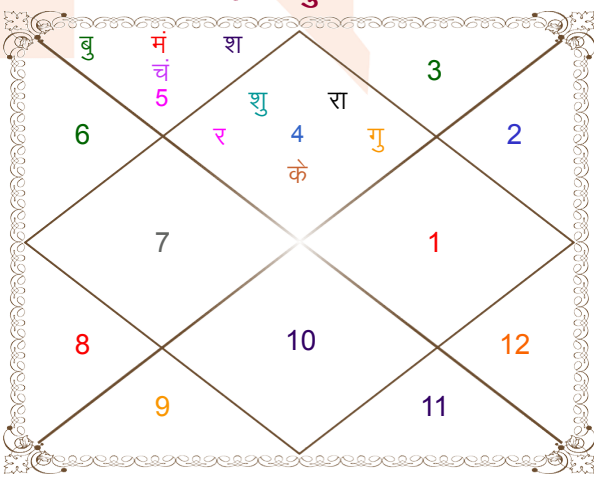

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

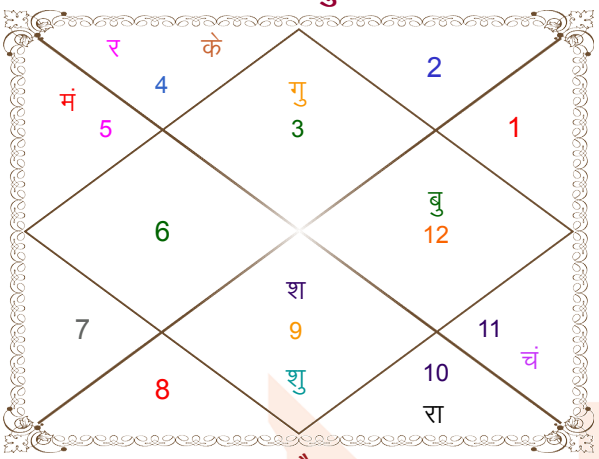

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

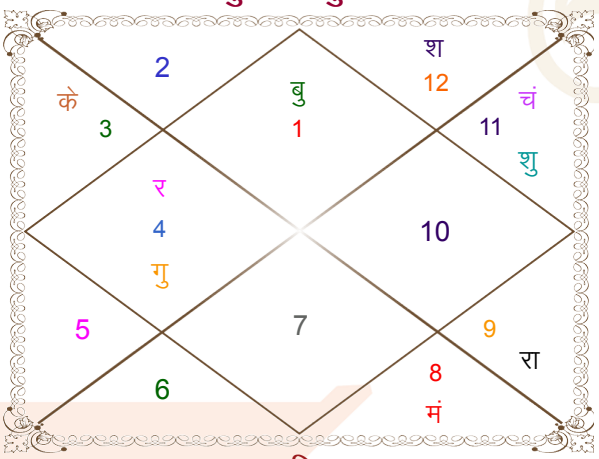

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

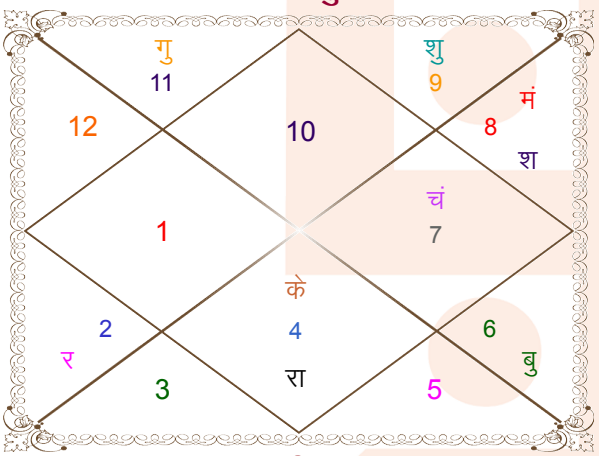

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

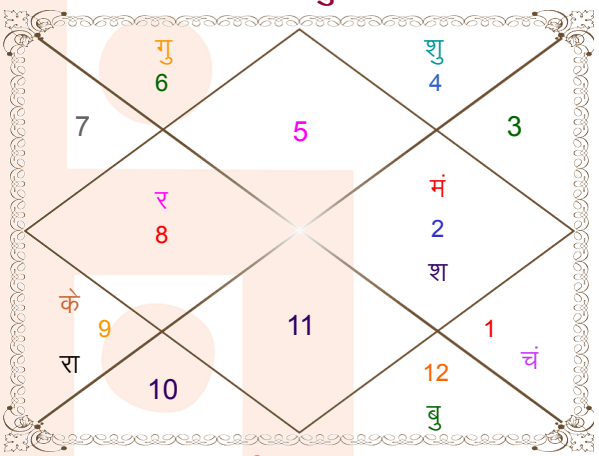

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

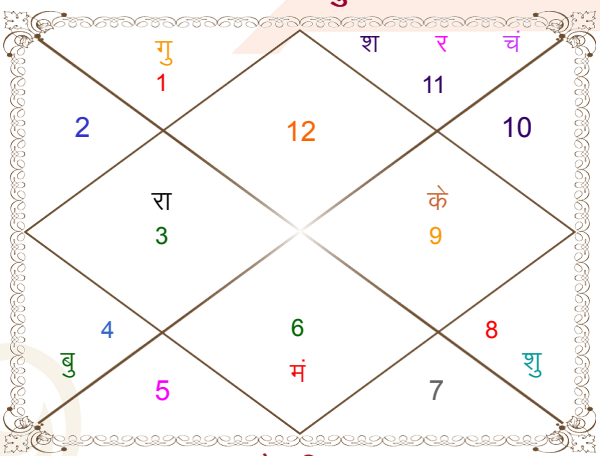

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

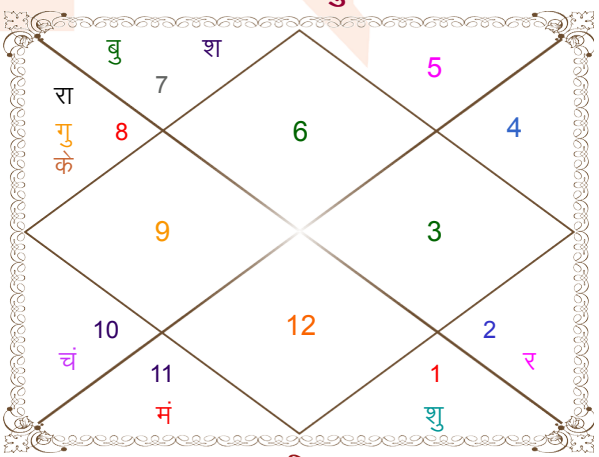

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

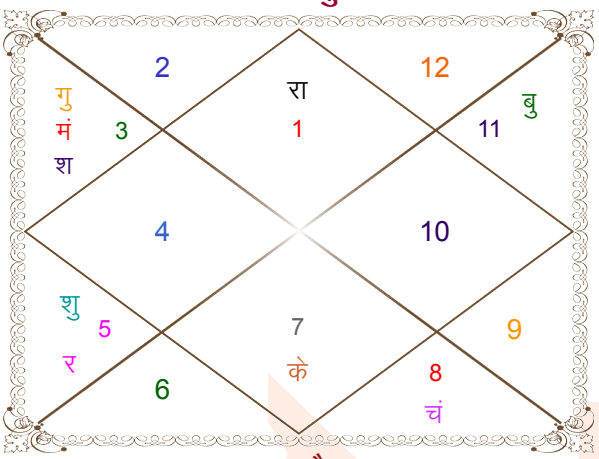

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

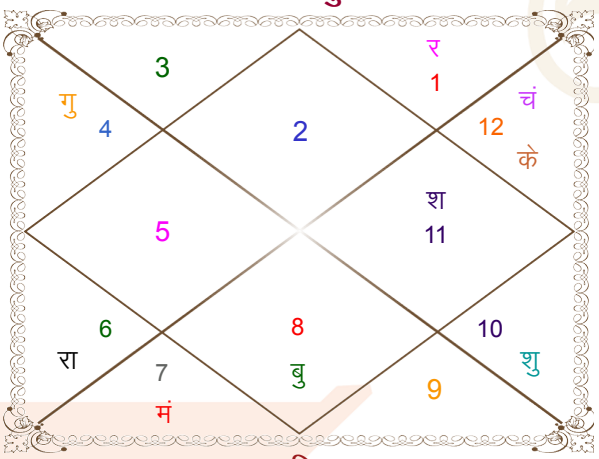

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

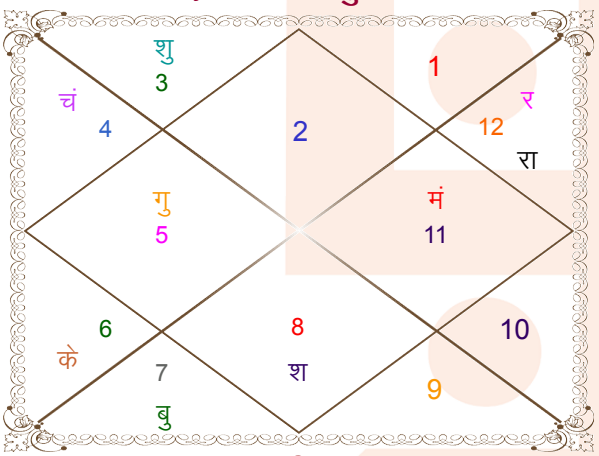

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

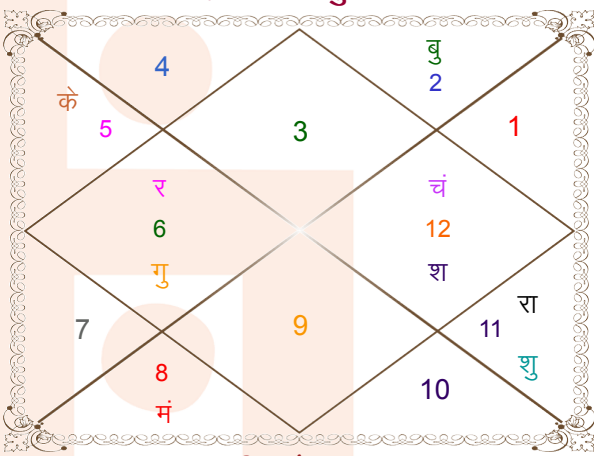

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

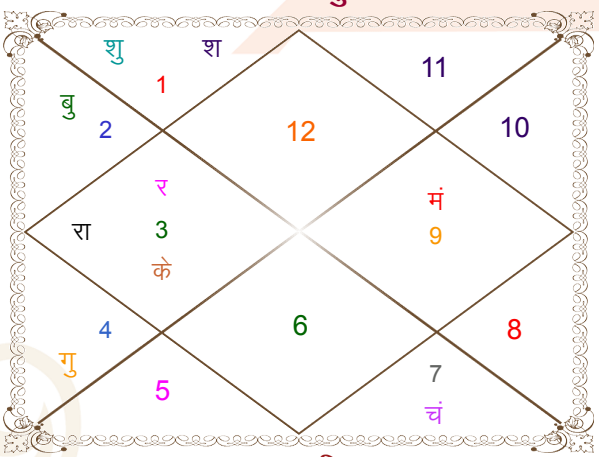

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

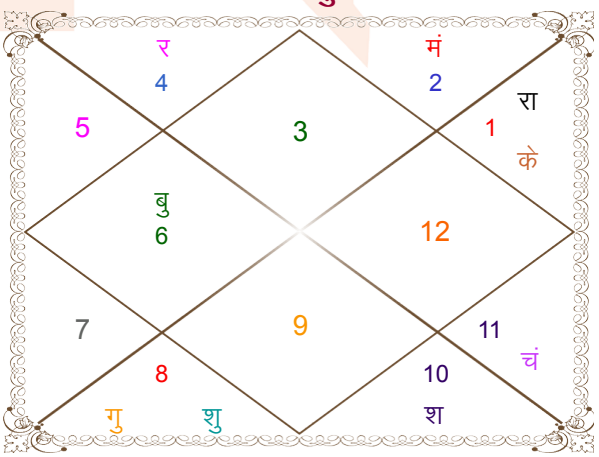

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

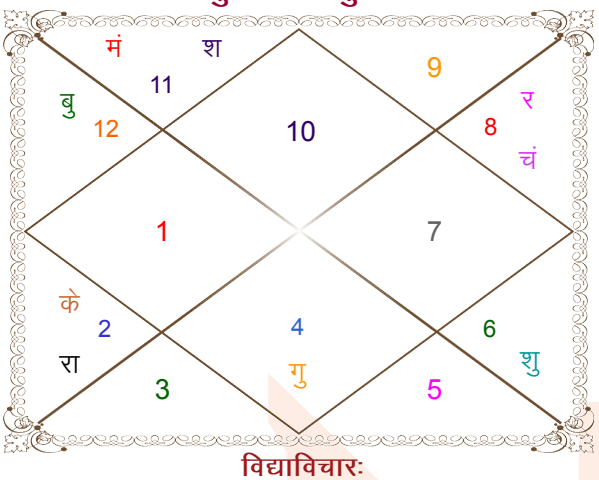

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

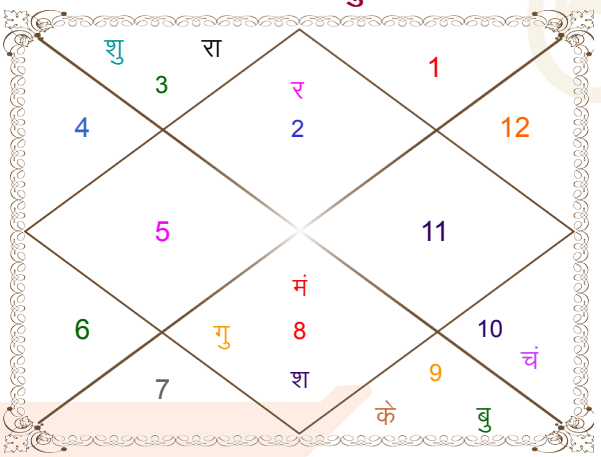

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

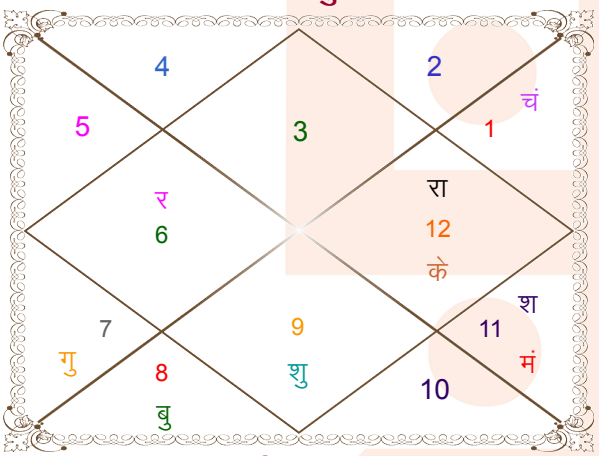

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

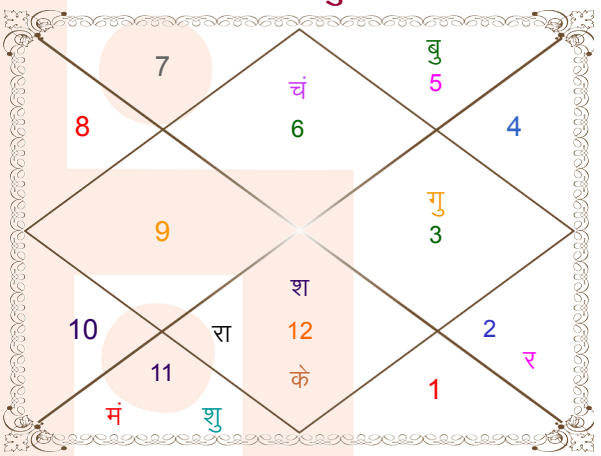

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

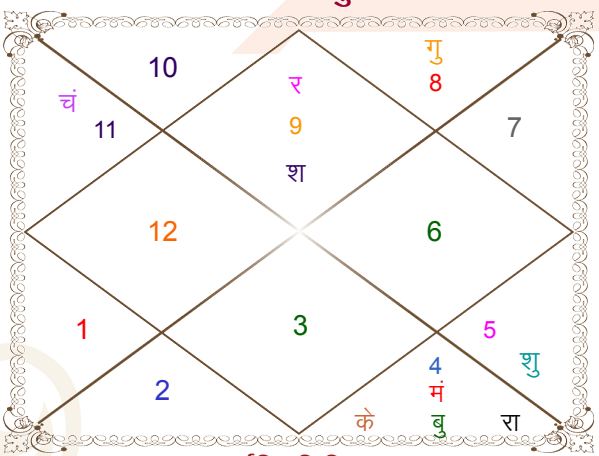

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

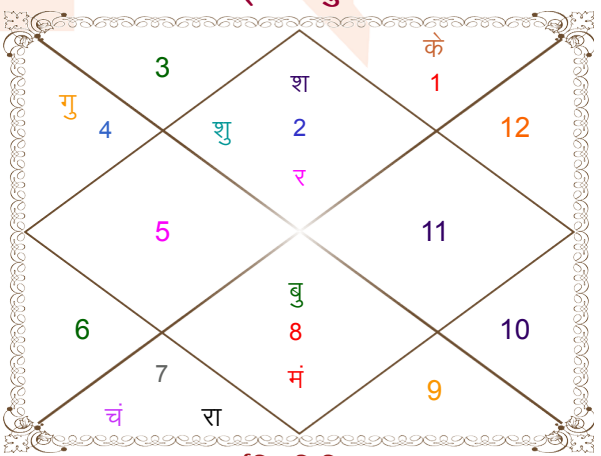

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	कर्क	कुंभ	सिंह	कर्क	तुला	सिंह	धनु	कन्या	मीन
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मिथु	कर्क	कुंभ	सिंह	मीन	मिथु	धनु	धनु	मक	कर्क
चतुर्थांश	मेष	कर्क	कुंभ	वृश्चि	मेष	कर्क	कुंभ	मीन	धनु	मिथु
सप्तमांश	मीन	कुंभ	कुंभ	कन्या	कर्क	मेष	वृश्चि	कुंभ	मिथु	धनु
नवमांश	मेष	सिंह	वृश्चि	मिथु	कुंभ	मिथु	सिंह	मिथु	मेष	तुला
दशमांश	वृष	मेष	मीन	तुला	वृश्चि	कर्क	मक	कुंभ	कन्या	मीन
द्वादशांश	मिथु	कन्या	मीन	वृश्चि	वृष	कन्या	कुंभ	मीन	कुंभ	सिंह
षोडशांश	मीन	मिथु	तुला	धनु	वृष	कर्क	मेष	मेष	मिथु	मिथु
विंशांश	मिथु	कर्क	कुंभ	वृष	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	मक	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	मक	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	मीन	कर्क	कन्या	कुंभ	वृष	वृष
सप्तविंशांश	वृष	वृष	मक	वृश्चि	धनु	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	मिथु	धनु
त्रिंशांश	मिथु	कन्या	मेष	कुंभ	वृश्चि	तुला	धनु	कुंभ	मीन	मीन
खवेदांश	कन्या	वृष	कन्या	कुंभ	सिंह	मिथु	कुंभ	मीन	मीन	मीन
अक्षवेदांश	धनु	धनु	कुंभ	कर्क	कर्क	वृश्चि	सिंह	धनु	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	वृष	वृष	तुला	वृश्चि	वृश्चि	कर्क	वृष	वृष	तुला	मेष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
रवि	1 ———	1 ———	2 पारिजात	2 भेदक
चन्द्र	0 ———	0 ———	0 ———	0 ———
मंगळ	1 ———	1 ———	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ———	0 ———	0 ———	1 ———
गुरु	1 ———	1 ———	4 गोपुर	6 केरल
शुक्र	0 ———	0 ———	1 ———	1 ———
शनि	1 ———	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
राहु	1 ———	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
केतु	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.05	11.30	15.65	9.80	10.00	10.75	13.00	13.65	8.45
सप्तवर्ग	11.18	11.50	14.85	9.25	11.00	10.13	13.75	13.63	8.23
दशवर्ग	10.30	9.63	15.80	12.23	10.60	12.43	13.00	15.08	8.28
षोडशवर्ग	11.45	10.03	15.30	11.68	10.80	12.20	12.25	14.28	8.53

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगळ	मित्र	शत्रु	———	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	सम	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	———	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगळ	अधिमित्र	सम	———	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	———	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	———	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	मित्र	———	सम	अधिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	———	अधिमित्र	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	———

षट्बल आणि भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	32	30	3	44	22	13	44
सप्तवर्गज बल	62	64	116	68	68	58	114
ओजयुग्मक बल	15	15	30	15	30	0	30
केन्द्र बल	60	30	30	60	60	30	15
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	0	0	0
एकुण स्थान बल	183	139	195	186	180	102	203
एकुण दिग्बल	54	56	55	31	58	8	16
नतोन्नत बल	54	6	6	60	54	54	6
पक्ष बल	10	101	10	10	50	50	10
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
महिना बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	113	46	44	50	6	40	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण कालबल	236	183	60	224	171	145	91
एकुण चेष्टाबल	0	0	14	53	40	45	51
एकुण नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
एकुण दृग्बल	3	-22	9	13	-17	7	-4
एकुण षट्बल	537	407	350	534	465	350	365
रूप षट्बल	8.9	6.8	5.8	8.9	7.8	5.8	6.1
किमान आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
प्रमाण	1.8	1.1	1.2	1.3	1.2	1.1	1.2
तौलनिक स्थिति	1	6	5	2	4	7	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	39.85	39.16	6.77	48.29	29.72	24.73	47.20
कष्ट फल	16.54	16.84	51.11	10.40	27.51	26.14	12.16

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	350	350	465	365	365	465	350	350	534	407	537	534
भावदिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	35	27	9	74	53	53	66	54	23	48	8	0
एकुण भाव बल	444	387	484	499	439	559	446	443	577	455	595	584
रूप भाव बल	7.4	6.5	8.1	8.3	7.3	9.3	7.4	7.4	9.6	7.6	9.9	9.7
तौलनिक स्थिति	9	12	6	5	11	4	8	10	3	7	1	2

उपग्रह आणि आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	21:47:32	--	--	विशाखा	1	16
गुलिक	गु	तुला	05:45:34	--	--	चित्रा	4	14
काल	का	तुला	27:55:20	--	--	विशाखा	3	16
मृत्यु	मृ	धनु	12:30:02	--	--	मूल	4	19
यमघंटक	यम	सिंह	19:13:44	--	--	पू.फाल्गुनी	2	11
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	26:42:19	--	--	आश्लेषा	4	9
धूम	धू	वृश्चि	18:49:54	--	--	ज्येष्ठा	1	18
व्यतिपात	व्य	सिंह	11:10:06	--	--	मघा	4	10
परिवेश	परि	कुंभ	11:10:06	--	--	शतभिषा	2	24
इन्द्रचाप	इ	वृष	18:49:54	--	--	रोहिणी	3	4
उपकेतु	उप	मिथु	05:29:54	--	--	मृगशिरा	4	5

प्राणपद	:	धनु	25:49:06	कारकाँश लग्न	:	मिथु	19:32:25
भाव लग्न	:	वृश्चि	02:00:52	होरा लग्न	:	कुंभ	28:31:49
घटी लग्न	:	कुंभ	18:04:42	वर्णद लग्न	:	तुला	09:40:39

उपग्रह कुंडली

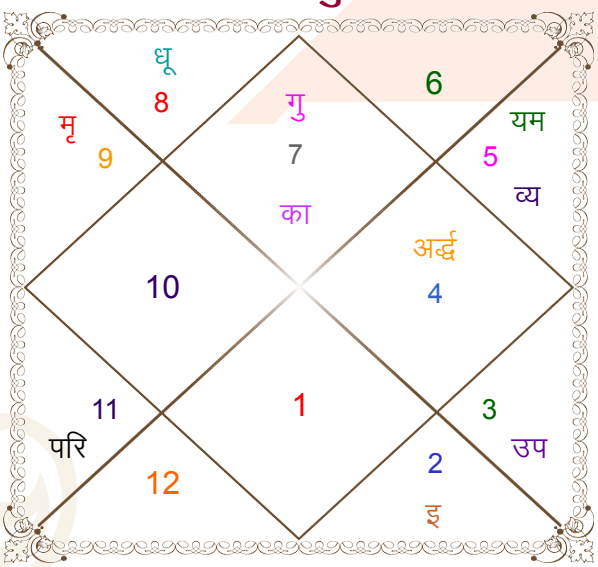

आरूढ़ कुंडली

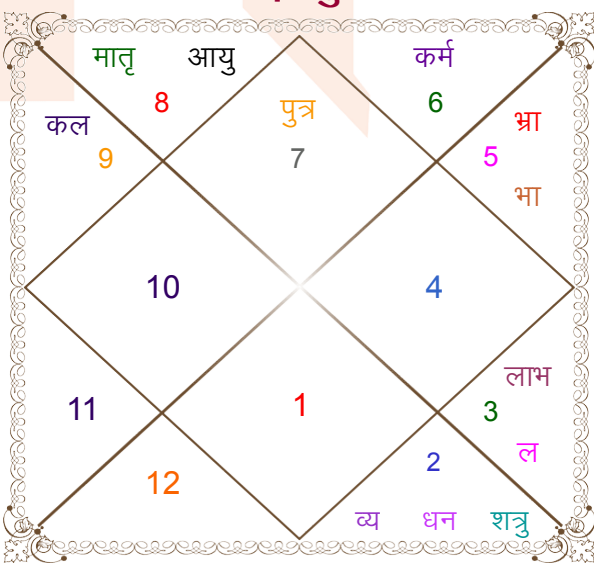

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	एकुण
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
एकुण	**5**	**5**	**4**	**2**	**3**	**4**	**4**	**4**	**6**	**4**	**3**	**4**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	एकुण
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगळ	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
एकुण	**5**	**1**	**6**	**6**	**2**	**4**	**3**	**3**	**6**	**4**	**5**	**4**	**49**

मंगळ का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	एकुण
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
एकुण	**4**	**5**	**2**	**3**	**5**	**1**	**1**	**5**	**2**	**3**	**3**	**5**	**39**

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	एकुण
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
एकुण	**4**	**5**	**6**	**3**	**6**	**5**	**2**	**1**	**8**	**3**	**6**	**5**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	एकुण
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगळ	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
एकुण	**5**	**5**	**4**	**4**	**4**	**5**	**6**	**6**	**4**	**4**	**6**	**3**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	एकुण
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगळ	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
एकुण	**4**	**4**	**5**	**4**	**4**	**3**	**5**	**4**	**4**	**6**	**6**	**3**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	एकुण
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगळ	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
एकुण	**4**	**4**	**4**	**3**	**4**	**4**	**3**	**5**	**3**	**1**	**4**	**0**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	एकुण
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगळ	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
एकुण	**6**	**3**	**6**	**3**	**3**	**4**	**5**	**4**	**3**	**4**	**5**	**3**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	4	4	3	5	3	1	4	0	4	4	4	3	39
गुरु	6	6	4	4	6	3	5	5	4	4	4	5	56
मंगळ	2	3	3	5	4	5	2	3	5	1	1	5	39
सूर्य	4	3	4	5	5	4	2	3	4	4	4	6	48
शुक्र	4	6	6	3	4	4	5	4	4	3	5	4	52
बुध	3	6	5	4	5	6	3	6	5	2	1	8	54
चंद्र	6	6	2	4	3	3	6	4	5	4	5	1	49
बिन्दु	29	34	27	30	30	26	27	25	31	22	24	32	337
रेखा	27	22	29	26	26	30	29	31	25	34	32	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	1	3	0	5	0	0	1	0	1	3	1	3	18
गुरु	2	3	0	0	2	0	1	1	0	1	0	1	11
मंगळ	0	2	2	2	2	4	1	0	3	0	0	2	18
सूर्य	0	0	2	2	1	1	0	0	0	1	2	3	12
शुक्र	0	3	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	7
बुध	0	4	4	0	2	4	2	2	2	0	0	4	24
चंद्र	3	3	0	3	0	0	4	3	2	1	3	0	22
रेखा	6	18	9	12	7	10	9	7	8	6	6	14	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	1	2	0	5	0	0	1	0	1	2	1	2	15
गुरु	1	2	0	0	2	0	1	1	0	1	0	1	9
मंगळ	0	1	2	2	2	2	1	0	3	0	0	0	13
सूर्य	0	0	1	2	1	1	0	0	0	0	2	3	10
शुक्र	0	3	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	5
बुध	0	2	0	0	2	0	2	2	2	0	0	2	12
चंद्र	0	0	0	3	0	0	4	0	2	0	3	0	12
रेखा	2	10	3	12	7	3	9	4	8	3	6	9	76

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	89	91	98	112	79	50	108
ग्रह पिंड	45	95	75	60	40	0	70
शोध्य पिंड	134	186	173	172	119	50	178

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

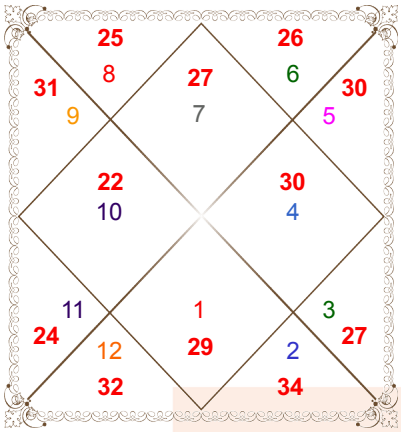

सूर्य का अष्टकवर्ग

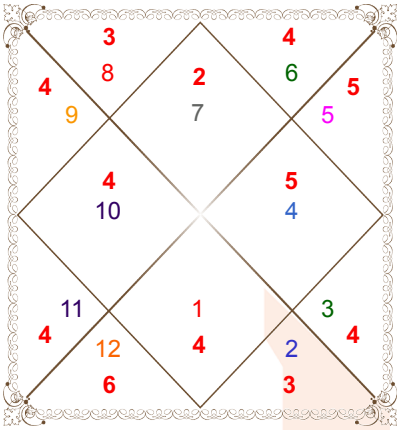

चंद्र का अष्टकवर्ग

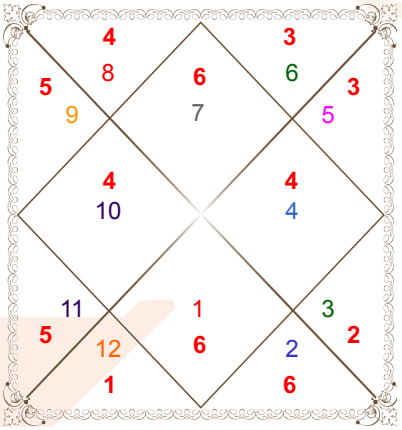

मंगळ का अष्टकवर्ग

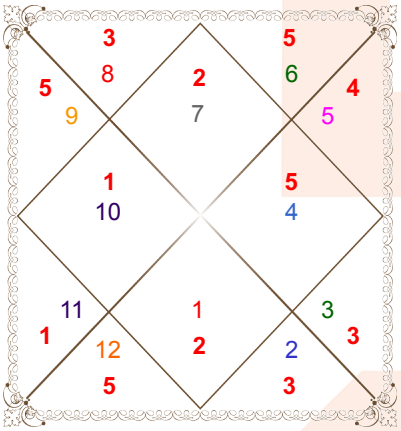

बुद्ध का अष्टकवर्ग

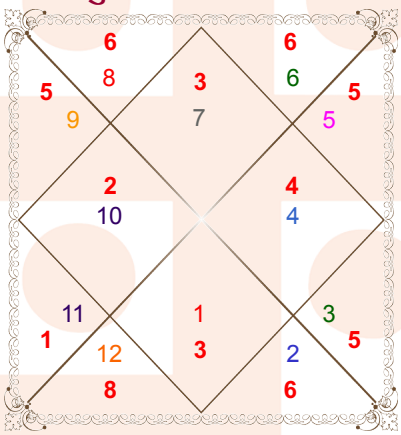

गुरू का अष्टकवर्ग

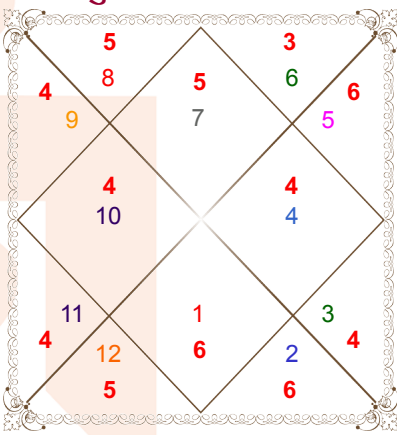

शुक्र का अष्टकवर्ग

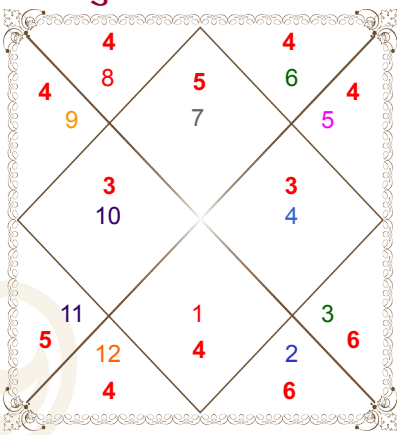

शनि का अष्टकवर्ग

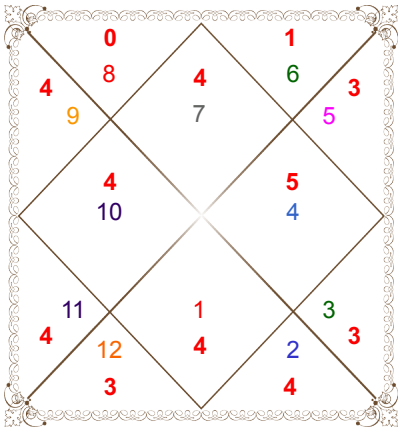

लग्न का अष्टकवर्ग

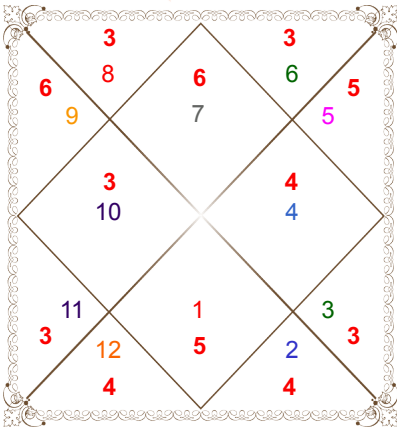

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : मंगळ 1 वर्ष 3 महिना 2 दिवस

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
22/07/1959		23/10/1960		24/10/1978		24/10/1994		24/10/2013	
23/10/1960		24/10/1978		24/10/1994		24/10/2013		24/10/2030	
	00/00/0000	राहु	07/07/1963	गुरु	11/12/1980	शनि	27/10/1997	बुध	21/03/2016
	00/00/0000	गुरु	29/11/1965	शनि	24/06/1983	बुध	06/07/2000	केतु	19/03/2017
	00/00/0000	शनि	05/10/1968	बुध	29/09/1985	केतु	15/08/2001	शुक्र	17/01/2020
	00/00/0000	बुध	25/04/1971	केतु	05/09/1986	शुक्र	14/10/2004	सूर्य	23/11/2020
	00/00/0000	केतु	12/05/1972	शुक्र	06/05/1989	सूर्य	26/09/2005	चंद्र	24/04/2022
	22/07/1959	शुक्र	13/05/1975	सूर्य	22/02/1990	चंद्र	28/04/2007	मंगळ	22/04/2023
शुक्र	18/11/1959	सूर्य	06/04/1976	चंद्र	24/06/1991	मंगळ	05/06/2008	राहु	08/11/2025
सूर्य	24/03/1960	चंद्र	05/10/1977	मंगळ	30/05/1992	राहु	12/04/2011	गुरु	14/02/2028
चंद्र	23/10/1960	मंगळ	24/10/1978	राहु	24/10/1994	गुरु	24/10/2013	शनि	24/10/2030

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष	
24/10/2030		24/10/2037		24/10/2057		24/10/2063		24/10/2073	
24/10/2037		24/10/2057		24/10/2063		24/10/2073		00/00/0000	
केतु	22/03/2031	शुक्र	22/02/2041	सूर्य	10/02/2058	चंद्र	24/08/2064	मंगळ	22/03/2074
शुक्र	21/05/2032	सूर्य	22/02/2042	चंद्र	12/08/2058	मंगळ	25/03/2065	राहु	09/04/2075
सूर्य	26/09/2032	चंद्र	24/10/2043	मंगळ	18/12/2058	राहु	24/09/2066	गुरु	15/03/2076
चंद्र	27/04/2033	मंगळ	23/12/2044	राहु	12/11/2059	गुरु	24/01/2068	शनि	24/04/2077
मंगळ	23/09/2033	राहु	24/12/2047	गुरु	30/08/2060	शनि	24/08/2069	बुध	21/04/2078
राहु	12/10/2034	गुरु	24/08/2050	शनि	12/08/2061	बुध	23/01/2071	केतु	17/09/2078
गुरु	18/09/2035	शनि	24/10/2053	बुध	18/06/2062	केतु	24/08/2071	शुक्र	22/07/2079
शनि	27/10/2036	बुध	24/08/2056	केतु	24/10/2062	शुक्र	24/04/2073		00/00/0000
बुध	24/10/2037	केतु	24/10/2057	शुक्र	24/10/2063	सूर्य	24/10/2073		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल मंगळ 1 वर्ष 3 मा 8 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
22/07/1959		18/11/1959		24/03/1960		23/10/1960		07/07/1963	
18/11/1959		24/03/1960		23/10/1960		07/07/1963		29/11/1965	
	00/00/0000	सूर्य	24/11/1959	चंद्र	11/04/1960	राहु	20/03/1961	गुरु	01/11/1963
	00/00/0000	चंद्र	05/12/1959	मंगळ	24/04/1960	गुरु	30/07/1961	शनि	18/03/1964
	00/00/0000	मंगळ	12/12/1959	राहु	26/05/1960	शनि	02/01/1962	बुध	21/07/1964
	00/00/0000	राहु	31/12/1959	गुरु	23/06/1960	बुध	22/05/1962	केतु	10/09/1964
	00/00/0000	गुरु	17/01/1960	शनि	27/07/1960	केतु	18/07/1962	शुक्र	03/02/1965
	22/07/1959	शनि	07/02/1960	बुध	26/08/1960	शुक्र	30/12/1962	सूर्य	19/03/1965
शनि	24/08/1959	बुध	25/02/1960	केतु	07/09/1960	सूर्य	17/02/1963	चंद्र	31/05/1965
बुध	24/10/1959	केतु	03/03/1960	शुक्र	13/10/1960	चंद्र	10/05/1963	मंगळ	21/07/1965
केतु	18/11/1959	शुक्र	24/03/1960	सूर्य	23/10/1960	मंगळ	07/07/1963	राहु	29/11/1965

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
29/11/1965		05/10/1968		25/04/1971		12/05/1972		13/05/1975	
05/10/1968		25/04/1971		12/05/1972		13/05/1975		06/04/1976	
शनि	13/05/1966	बुध	14/02/1969	केतु	17/05/1971	शुक्र	11/11/1972	सूर्य	29/05/1975
बुध	08/10/1966	केतु	10/04/1969	शुक्र	20/07/1971	सूर्य	05/01/1973	चंद्र	26/06/1975
केतु	07/12/1966	शुक्र	12/09/1969	सूर्य	08/08/1971	चंद्र	06/04/1973	मंगळ	15/07/1975
शुक्र	30/05/1967	सूर्य	28/10/1969	चंद्र	09/09/1971	मंगळ	09/06/1973	राहु	02/09/1975
सूर्य	21/07/1967	चंद्र	14/01/1970	मंगळ	01/10/1971	राहु	20/11/1973	गुरु	16/10/1975
चंद्र	16/10/1967	मंगळ	09/03/1970	राहु	28/11/1971	गुरु	15/04/1974	शनि	07/12/1975
मंगळ	15/12/1967	राहु	27/07/1970	गुरु	18/01/1972	शनि	06/10/1974	बुध	23/01/1976
राहु	19/05/1968	गुरु	28/11/1970	शनि	19/03/1972	बुध	10/03/1975	केतु	11/02/1976
गुरु	05/10/1968	शनि	25/04/1971	बुध	12/05/1972	केतु	13/05/1975	शुक्र	06/04/1976

राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
06/04/1976		05/10/1977		24/10/1978		11/12/1980		24/06/1983	
05/10/1977		24/10/1978		11/12/1980		24/06/1983		29/09/1985	
चंद्र	21/05/1976	मंगळ	28/10/1977	गुरु	05/02/1979	शनि	07/05/1981	बुध	20/10/1983
मंगळ	22/06/1976	राहु	24/12/1977	शनि	08/06/1979	बुध	15/09/1981	केतु	07/12/1983
राहु	12/09/1976	गुरु	14/02/1978	बुध	27/09/1979	केतु	08/11/1981	शुक्र	23/04/1984
गुरु	24/11/1976	शनि	15/04/1978	केतु	11/11/1979	शुक्र	11/04/1982	सूर्य	03/06/1984
शनि	19/02/1977	बुध	09/06/1978	शुक्र	20/03/1980	सूर्य	27/05/1982	चंद्र	11/08/1984
बुध	08/05/1977	केतु	01/07/1978	सूर्य	28/04/1980	चंद्र	12/08/1982	मंगळ	29/09/1984
केतु	09/06/1977	शुक्र	03/09/1978	चंद्र	02/07/1980	मंगळ	05/10/1982	राहु	31/01/1985
शुक्र	08/09/1977	सूर्य	22/09/1978	मंगळ	16/08/1980	राहु	21/02/1983	गुरु	21/05/1985
सूर्य	05/10/1977	चंद्र	24/10/1978	राहु	11/12/1980	गुरु	24/06/1983	शनि	29/09/1985

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ	
29/09/1985		05/09/1986		06/05/1989		22/02/1990		24/06/1991	
05/09/1986		06/05/1989		22/02/1990		24/06/1991		30/05/1992	
केतु	19/10/1985	शुक्र	15/02/1987	सूर्य	21/05/1989	चंद्र	04/04/1990	मंगळ	14/07/1991
शुक्र	15/12/1985	सूर्य	04/04/1987	चंद्र	14/06/1989	मंगळ	02/05/1990	राहु	04/09/1991
सूर्य	01/01/1986	चंद्र	24/06/1987	मंगळ	01/07/1989	राहु	15/07/1990	गुरु	19/10/1991
चंद्र	30/01/1986	मंगळ	20/08/1987	राहु	14/08/1989	गुरु	17/09/1990	शनि	12/12/1991
मंगळ	18/02/1986	राहु	13/01/1988	गुरु	22/09/1989	शनि	04/12/1990	बुध	29/01/1992
राहु	11/04/1986	गुरु	22/05/1988	शनि	07/11/1989	बुध	11/02/1991	केतु	18/02/1992
गुरु	26/05/1986	शनि	23/10/1988	बुध	19/12/1989	केतु	11/03/1991	शुक्र	15/04/1992
शनि	19/07/1986	बुध	10/03/1989	केतु	05/01/1990	शुक्र	31/05/1991	सूर्य	02/05/1992
बुध	05/09/1986	केतु	06/05/1989	शुक्र	22/02/1990	सूर्य	24/06/1991	चंद्र	30/05/1992

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
30/05/1992		24/10/1994		27/10/1997		06/07/2000		15/08/2001	
24/10/1994		27/10/1997		06/07/2000		15/08/2001		14/10/2004	
राहु	09/10/1992	शनि	16/04/1995	बुध	15/03/1998	केतु	30/07/2000	शुक्र	24/02/2002
गुरु	03/02/1993	बुध	19/09/1995	केतु	11/05/1998	शुक्र	05/10/2000	सूर्य	22/04/2002
शनि	22/06/1993	केतु	22/11/1995	शुक्र	22/10/1998	सूर्य	25/10/2000	चंद्र	28/07/2002
बुध	24/10/1993	शुक्र	23/05/1996	सूर्य	10/12/1998	चंद्र	28/11/2000	मंगळ	03/10/2002
केतु	14/12/1993	सूर्य	17/07/1996	चंद्र	02/03/1999	मंगळ	22/12/2000	राहु	26/03/2003
शुक्र	09/05/1994	चंद्र	16/10/1996	मंगळ	29/04/1999	राहु	20/02/2001	गुरु	27/08/2003
सूर्य	22/06/1994	मंगळ	19/12/1996	राहु	23/09/1999	गुरु	15/04/2001	शनि	26/02/2004
चंद्र	03/09/1994	राहु	02/06/1997	गुरु	01/02/2000	शनि	18/06/2001	बुध	08/08/2004
मंगळ	24/10/1994	गुरु	27/10/1997	शनि	06/07/2000	बुध	15/08/2001	केतु	14/10/2004

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ		शनि - राहु		शनि - गुरु	
14/10/2004		26/09/2005		28/04/2007		05/06/2008		12/04/2011	
26/09/2005		28/04/2007		05/06/2008		12/04/2011		24/10/2013	
सूर्य	01/11/2004	चंद्र	14/11/2005	मंगळ	21/05/2007	राहु	09/11/2008	गुरु	14/08/2011
चंद्र	30/11/2004	मंगळ	17/12/2005	राहु	21/07/2007	गुरु	27/03/2009	शनि	07/01/2012
मंगळ	20/12/2004	राहु	14/03/2006	गुरु	13/09/2007	शनि	08/09/2009	बुध	17/05/2012
राहु	10/02/2005	गुरु	30/05/2006	शनि	16/11/2007	बुध	03/02/2010	केतु	10/07/2012
गुरु	28/03/2005	शनि	30/08/2006	बुध	12/01/2008	केतु	04/04/2010	शुक्र	12/12/2012
शनि	22/05/2005	बुध	20/11/2006	केतु	05/02/2008	शुक्र	25/09/2010	सूर्य	27/01/2013
बुध	10/07/2005	केतु	23/12/2006	शुक्र	13/04/2008	सूर्य	16/11/2010	चंद्र	14/04/2013
केतु	31/07/2005	शुक्र	30/03/2007	सूर्य	03/05/2008	चंद्र	11/02/2011	मंगळ	07/06/2013
शुक्र	26/09/2005	सूर्य	28/04/2007	चंद्र	05/06/2008	मंगळ	12/04/2011	राहु	24/10/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
24/10/2013		21/03/2016		19/03/2017		17/01/2020		23/11/2020	
21/03/2016		19/03/2017		17/01/2020		23/11/2020		24/04/2022	
बुध	25/02/2014	केतु	12/04/2016	शुक्र	07/09/2017	सूर्य	02/02/2020	चंद्र	05/01/2021
केतु	18/04/2014	शुक्र	11/06/2016	सूर्य	29/10/2017	चंद्र	28/02/2020	मंगळ	04/02/2021
शुक्र	11/09/2014	सूर्य	29/06/2016	चंद्र	23/01/2018	मंगळ	17/03/2020	राहु	23/04/2021
सूर्य	25/10/2014	चंद्र	29/07/2016	मंगळ	24/03/2018	राहु	03/05/2020	गुरु	01/07/2021
चंद्र	07/01/2015	मंगळ	19/08/2016	राहु	27/08/2018	गुरु	13/06/2020	शनि	21/09/2021
मंगळ	27/02/2015	राहु	13/10/2016	गुरु	12/01/2019	शनि	01/08/2020	बुध	03/12/2021
राहु	09/07/2015	गुरु	30/11/2016	शनि	24/06/2019	बुध	14/09/2020	केतु	02/01/2022
गुरु	03/11/2015	शनि	26/01/2017	बुध	18/11/2019	केतु	02/10/2020	शुक्र	29/03/2022
शनि	21/03/2016	बुध	19/03/2017	केतु	17/01/2020	शुक्र	23/11/2020	सूर्य	24/04/2022

बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
24/04/2022		22/04/2023		08/11/2025		14/02/2028		24/10/2030	
22/04/2023		08/11/2025		14/02/2028		24/10/2030		22/03/2031	
मंगळ	15/05/2022	राहु	08/09/2023	गुरु	26/02/2026	शनि	19/07/2028	केतु	02/11/2030
राहु	09/07/2022	गुरु	10/01/2024	शनि	07/07/2026	बुध	05/12/2028	शुक्र	27/11/2030
गुरु	26/08/2022	शनि	06/06/2024	बुध	02/11/2026	केतु	31/01/2029	सूर्य	04/12/2030
शनि	22/10/2022	बुध	16/10/2024	केतु	20/12/2026	शुक्र	14/07/2029	चंद्र	16/12/2030
बुध	13/12/2022	केतु	09/12/2024	शुक्र	07/05/2027	सूर्य	01/09/2029	मंगळ	25/12/2030
केतु	03/01/2023	शुक्र	13/05/2025	सूर्य	17/06/2027	चंद्र	22/11/2029	राहु	17/01/2031
शुक्र	04/03/2023	सूर्य	29/06/2025	चंद्र	25/08/2027	मंगळ	18/01/2030	गुरु	05/02/2031
सूर्य	22/03/2023	चंद्र	15/09/2025	मंगळ	13/10/2027	राहु	15/06/2030	शनि	01/03/2031
चंद्र	22/04/2023	मंगळ	08/11/2025	राहु	14/02/2028	गुरु	24/10/2030	बुध	22/03/2031

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगळ		केतु - राहु	
22/03/2031		21/05/2032		26/09/2032		27/04/2033		23/09/2033	
21/05/2032		26/09/2032		27/04/2033		23/09/2033		12/10/2034	
शुक्र	01/06/2031	सूर्य	28/05/2032	चंद्र	14/10/2032	मंगळ	06/05/2033	राहु	20/11/2033
सूर्य	22/06/2031	चंद्र	07/06/2032	मंगळ	26/10/2032	राहु	28/05/2033	गुरु	10/01/2034
चंद्र	28/07/2031	मंगळ	15/06/2032	राहु	27/11/2032	गुरु	17/06/2033	शनि	12/03/2034
मंगळ	22/08/2031	राहु	04/07/2032	गुरु	26/12/2032	शनि	11/07/2033	बुध	05/05/2034
राहु	25/10/2031	गुरु	21/07/2032	शनि	28/01/2033	बुध	01/08/2033	केतु	27/05/2034
गुरु	21/12/2031	शनि	10/08/2032	बुध	28/02/2033	केतु	10/08/2033	शुक्र	30/07/2034
शनि	26/02/2032	बुध	28/08/2032	केतु	12/03/2033	शुक्र	03/09/2033	सूर्य	18/08/2034
बुध	26/04/2032	केतु	05/09/2032	शुक्र	17/04/2033	सूर्य	11/09/2033	चंद्र	19/09/2034
केतु	21/05/2032	शुक्र	26/09/2032	सूर्य	27/04/2033	चंद्र	23/09/2033	मंगळ	12/10/2034

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
12/10/2034		18/09/2035		27/10/2036		24/10/2037		22/02/2041	
18/09/2035		27/10/2036		24/10/2037		22/02/2041		22/02/2042	
गुरु	26/11/2034	शनि	21/11/2035	बुध	17/12/2036	शुक्र	15/05/2038	सूर्य	13/03/2041
शनि	19/01/2035	बुध	17/01/2036	केतु	07/01/2037	सूर्य	15/07/2038	चंद्र	12/04/2041
बुध	09/03/2035	केतु	10/02/2036	शुक्र	08/03/2037	चंद्र	24/10/2038	मंगळ	03/05/2041
केतु	28/03/2035	शुक्र	17/04/2036	सूर्य	26/03/2037	मंगळ	03/01/2039	राहु	27/06/2041
शुक्र	24/05/2035	सूर्य	07/05/2036	चंद्र	26/04/2037	राहु	05/07/2039	गुरु	15/08/2041
सूर्य	10/06/2035	चंद्र	10/06/2036	मंगळ	17/05/2037	गुरु	14/12/2039	शनि	12/10/2041
चंद्र	09/07/2035	मंगळ	04/07/2036	राहु	10/07/2037	शनि	24/06/2040	बुध	02/12/2041
मंगळ	29/07/2035	राहु	03/09/2036	गुरु	27/08/2037	बुध	13/12/2040	केतु	24/12/2041
राहु	18/09/2035	गुरु	27/10/2036	शनि	24/10/2037	केतु	22/02/2041	शुक्र	22/02/2042

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
22/02/2042		24/10/2043		23/12/2044		24/12/2047		24/08/2050	
24/10/2043		23/12/2044		24/12/2047		24/08/2050		24/10/2053	
चंद्र	14/04/2042	मंगळ	18/11/2043	राहु	06/06/2045	गुरु	02/05/2048	शनि	23/02/2051
मंगळ	20/05/2042	राहु	21/01/2044	गुरु	30/10/2045	शनि	03/10/2048	बुध	06/08/2051
राहु	19/08/2042	गुरु	18/03/2044	शनि	21/04/2046	बुध	18/02/2049	केतु	13/10/2051
गुरु	08/11/2042	शनि	24/05/2044	बुध	24/09/2046	केतु	16/04/2049	शुक्र	22/04/2052
शनि	13/02/2043	बुध	24/07/2044	केतु	26/11/2046	शुक्र	25/09/2049	सूर्य	19/06/2052
बुध	10/05/2043	केतु	18/08/2044	शुक्र	28/05/2047	सूर्य	13/11/2049	चंद्र	24/09/2052
केतु	14/06/2043	शुक्र	28/10/2044	सूर्य	22/07/2047	चंद्र	02/02/2050	मंगळ	30/11/2052
शुक्र	24/09/2043	सूर्य	18/11/2044	चंद्र	21/10/2047	मंगळ	31/03/2050	राहु	23/05/2053
सूर्य	24/10/2043	चंद्र	23/12/2044	मंगळ	24/12/2047	राहु	24/08/2050	गुरु	24/10/2053

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ	
24/10/2053		24/08/2056		24/10/2057		10/02/2058		12/08/2058	
24/08/2056		24/10/2057		10/02/2058		12/08/2058		18/12/2058	
बुध	19/03/2054	केतु	17/09/2056	सूर्य	29/10/2057	चंद्र	26/02/2058	मंगळ	19/08/2058
केतु	19/05/2054	शुक्र	27/11/2056	चंद्र	07/11/2057	मंगळ	08/03/2058	राहु	08/09/2058
शुक्र	07/11/2054	सूर्य	19/12/2056	मंगळ	14/11/2057	राहु	05/04/2058	गुरु	25/09/2058
सूर्य	29/12/2054	चंद्र	23/01/2057	राहु	30/11/2057	गुरु	29/04/2058	शनि	15/10/2058
चंद्र	25/03/2055	मंगळ	17/02/2057	गुरु	15/12/2057	शनि	28/05/2058	बुध	02/11/2058
मंगळ	25/05/2055	राहु	22/04/2057	शनि	01/01/2058	बुध	23/06/2058	केतु	09/11/2058
राहु	27/10/2055	गुरु	18/06/2057	बुध	17/01/2058	केतु	03/07/2058	शुक्र	01/12/2058
गुरु	13/03/2056	शनि	24/08/2057	केतु	23/01/2058	शुक्र	03/08/2058	सूर्य	07/12/2058
शनि	24/08/2056	बुध	24/10/2057	शुक्र	10/02/2058	सूर्य	12/08/2058	चंद्र	18/12/2058

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
18/12/2058		12/11/2059		30/08/2060		12/08/2061		18/06/2062	
12/11/2059		30/08/2060		12/08/2061		18/06/2062		24/10/2062	
राहु	05/02/2059	गुरु	20/12/2059	शनि	24/10/2060	बुध	25/09/2061	केतु	26/06/2062
गुरु	21/03/2059	शनि	05/02/2060	बुध	12/12/2060	केतु	13/10/2061	शुक्र	17/07/2062
शनि	12/05/2059	बुध	17/03/2060	केतु	01/01/2061	शुक्र	04/12/2061	सूर्य	23/07/2062
बुध	28/06/2059	केतु	03/04/2060	शुक्र	28/02/2061	सूर्य	19/12/2061	चंद्र	03/08/2062
केतु	17/07/2059	शुक्र	22/05/2060	सूर्य	17/03/2061	चंद्र	14/01/2062	मंगळ	10/08/2062
शुक्र	09/09/2059	सूर्य	05/06/2060	चंद्र	15/04/2061	मंगळ	01/02/2062	राहु	30/08/2062
सूर्य	26/09/2059	चंद्र	30/06/2060	मंगळ	05/05/2061	राहु	20/03/2062	गुरु	16/09/2062
चंद्र	23/10/2059	मंगळ	17/07/2060	राहु	26/06/2061	गुरु	30/04/2062	शनि	06/10/2062
मंगळ	12/11/2059	राहु	30/08/2060	गुरु	12/08/2061	शनि	18/06/2062	बुध	24/10/2062

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
24/10/2062		24/10/2063		24/08/2064		25/03/2065		24/09/2066	
24/10/2063		24/08/2064		25/03/2065		24/09/2066		24/01/2068	
शुक्र	24/12/2062	चंद्र	19/11/2063	मंगळ	05/09/2064	राहु	15/06/2065	गुरु	27/11/2066
सूर्य	11/01/2063	मंगळ	06/12/2063	राहु	07/10/2064	गुरु	27/08/2065	शनि	13/02/2067
चंद्र	11/02/2063	राहु	21/01/2064	गुरु	04/11/2064	शनि	22/11/2065	बुध	23/04/2067
मंगळ	04/03/2063	गुरु	02/03/2064	शनि	08/12/2064	बुध	07/02/2066	केतु	21/05/2067
राहु	28/04/2063	शनि	19/04/2064	बुध	07/01/2065	केतु	11/03/2066	शुक्र	10/08/2067
गुरु	15/06/2063	बुध	01/06/2064	केतु	20/01/2065	शुक्र	11/06/2066	सूर्य	04/09/2067
शनि	12/08/2063	केतु	19/06/2064	शुक्र	24/02/2065	सूर्य	08/07/2066	चंद्र	14/10/2067
बुध	03/10/2063	शुक्र	08/08/2064	सूर्य	07/03/2065	चंद्र	23/08/2066	मंगळ	12/11/2067
केतु	24/10/2063	सूर्य	24/08/2064	चंद्र	25/03/2065	मंगळ	24/09/2066	राहु	24/01/2068

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
24/01/2068		24/08/2069		23/01/2071		24/08/2071		24/04/2073	
24/08/2069		23/01/2071		24/08/2071		24/04/2073		24/10/2073	
शनि	24/04/2068	बुध	05/11/2069	केतु	05/02/2071	शुक्र	04/12/2071	सूर्य	03/05/2073
बुध	15/07/2068	केतु	05/12/2069	शुक्र	12/03/2071	सूर्य	03/01/2072	चंद्र	18/05/2073
केतु	18/08/2068	शुक्र	02/03/2070	सूर्य	23/03/2071	चंद्र	23/02/2072	मंगळ	29/05/2073
शुक्र	22/11/2068	सूर्य	27/03/2070	चंद्र	10/04/2071	मंगळ	30/03/2072	राहु	26/06/2073
सूर्य	21/12/2068	चंद्र	10/05/2070	मंगळ	22/04/2071	राहु	29/06/2072	गुरु	20/07/2073
चंद्र	07/02/2069	मंगळ	09/06/2070	राहु	24/05/2071	गुरु	18/09/2072	शनि	18/08/2073
मंगळ	13/03/2069	राहु	25/08/2070	गुरु	21/06/2071	शनि	23/12/2072	बुध	13/09/2073
राहु	08/06/2069	गुरु	02/11/2070	शनि	25/07/2071	बुध	20/03/2073	केतु	23/09/2073
गुरु	24/08/2069	शनि	23/01/2071	बुध	24/08/2071	केतु	24/04/2073	शुक्र	24/10/2073

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - गुरु - शनि	
26/02/2026 20:20	
07/07/2026 22:21	
शनि	19/03/2026 14:27
बुध	07/04/2026 04:08
केतु	14/04/2026 19:39
शुक्र	06/05/2026 15:59
सूर्य	13/05/2026 05:17
चंद्र	24/05/2026 03:27
मंगळ	31/05/2026 18:58
राहु	20/06/2026 10:53
गुरु	07/07/2026 22:21

बुध - गुरु - बुध	
07/07/2026 22:21	
02/11/2026 05:12	
बुध	24/07/2026 13:07
केतु	31/07/2026 09:19
शुक्र	19/08/2026 22:28
सूर्य	25/08/2026 19:12
चंद्र	04/09/2026 13:47
मंगळ	11/09/2026 09:59
राहु	29/09/2026 00:12
गुरु	14/10/2026 15:31
शनि	02/11/2026 05:12

बुध - गुरु - केतु	
02/11/2026 05:12	
20/12/2026 12:16	
केतु	05/11/2026 00:49
शुक्र	13/11/2026 02:00
सूर्य	15/11/2026 11:57
चंद्र	19/11/2026 12:32
मंगळ	22/11/2026 08:09
राहु	29/11/2026 14:00
गुरु	06/12/2026 00:33
शनि	13/12/2026 16:04
बुध	20/12/2026 12:16

बुध - गुरु - शुक्र	
20/12/2026 12:16	
07/05/2027 11:52	
शुक्र	12/01/2027 12:12
सूर्य	19/01/2027 09:47
चंद्र	30/01/2027 21:45
मंगळ	07/02/2027 22:55
राहु	28/02/2027 15:40
गुरु	19/03/2027 01:13
शनि	09/04/2027 21:33
बुध	29/04/2027 10:41
केतु	07/05/2027 11:52

बुध - गुरु - सूर्य	
07/05/2027 11:52	
17/06/2027 21:21	
सूर्य	09/05/2027 13:32
चंद्र	13/05/2027 00:20
मंगळ	15/05/2027 10:17
राहु	21/05/2027 15:18
गुरु	27/05/2027 03:46
शनि	02/06/2027 17:04
बुध	08/06/2027 13:49
केतु	10/06/2027 23:46
शुक्र	17/06/2027 21:21

बुध - गुरु - चंद्र	
17/06/2027 21:21	
25/08/2027 21:09	
चंद्र	23/06/2027 15:20
मंगळ	27/06/2027 15:55
राहु	08/07/2027 00:17
गुरु	17/07/2027 05:04
शनि	28/07/2027 03:14
बुध	06/08/2027 21:48
केतु	10/08/2027 22:23
शुक्र	22/08/2027 10:21
सूर्य	25/08/2027 21:09

बुध - गुरु - मंगळ	
25/08/2027 21:09	
13/10/2027 04:12	
मंगळ	28/08/2027 16:45
राहु	04/09/2027 22:37
गुरु	11/09/2027 09:09
शनि	19/09/2027 00:41
बुध	25/09/2027 20:53
केतु	28/09/2027 16:29
शुक्र	06/10/2027 17:40
सूर्य	09/10/2027 03:37
चंद्र	13/10/2027 04:12

बुध - गुरु - राहु	
13/10/2027 04:12	
14/02/2028 08:39	
राहु	31/10/2027 19:16
गुरु	17/11/2027 08:40
शनि	07/12/2027 00:34
बुध	24/12/2027 14:48
केतु	31/12/2027 20:39
शुक्र	21/01/2028 13:24
सूर्य	27/01/2028 18:25
चंद्र	07/02/2028 02:47
मंगळ	14/02/2028 08:39

बुध - शनि - शनि	
14/02/2028 08:39	
19/07/2028 00:33	
शनि	10/03/2028 00:10
बुध	01/04/2028 01:25
केतु	10/04/2028 03:21
शुक्र	06/05/2028 02:00
सूर्य	13/05/2028 20:47
चंद्र	26/05/2028 20:07
मंगळ	04/06/2028 22:02
राहु	28/06/2028 06:25
गुरु	19/07/2028 00:33

बुध - शनि - बुध	
19/07/2028 00:33	
05/12/2028 07:11	
बुध	07/08/2028 18:05
केतु	15/08/2028 21:04
शुक्र	08/09/2028 02:11
सूर्य	15/09/2028 01:19
चंद्र	26/09/2028 15:52
मंगळ	04/10/2028 18:51
राहु	25/10/2028 16:15
गुरु	13/11/2028 05:56
शनि	05/12/2028 07:11

बुध - शनि - केतु	
05/12/2028 07:11	
31/01/2029 15:34	
केतु	08/12/2028 15:29
शुक्र	18/12/2028 04:53
सूर्य	21/12/2028 01:42
चंद्र	25/12/2028 20:24
मंगळ	29/12/2028 04:41
राहु	06/01/2029 19:08
गुरु	14/01/2029 10:40
शनि	23/01/2029 12:35
बुध	31/01/2029 15:34

बुध - शनि - शुक्र	
31/01/2029 15:34	
14/07/2029 12:06	
शुक्र	27/02/2029 23:00
सूर्य	08/03/2029 03:37
चंद्र	21/03/2029 19:20
मंगळ	31/03/2029 08:44
राहु	24/04/2029 22:36
गुरु	16/05/2029 18:57
शनि	11/06/2029 17:36
बुध	04/07/2029 22:42
केतु	14/07/2029 12:06

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - शनि - सूर्य	
14/07/2029 12:06	
01/09/2029 15:51	
सूर्य	16/07/2029 23:05
चंद्र	21/07/2029 01:24
मंगळ	23/07/2029 22:13
राहु	31/07/2029 07:11
गुरु	06/08/2029 20:29
शनि	14/08/2029 15:17
बुध	21/08/2029 14:25
केतु	24/08/2029 11:14
शुक्र	01/09/2029 15:51

बुध - शनि - चंद्र	
01/09/2029 15:51	
22/11/2029 14:07	
चंद्र	08/09/2029 11:43
मंगळ	13/09/2029 06:25
राहु	25/09/2029 13:21
गुरु	06/10/2029 11:31
शनि	19/10/2029 10:51
बुध	31/10/2029 01:24
केतु	04/11/2029 20:06
शुक्र	18/11/2029 11:48
सूर्य	22/11/2029 14:07

बुध - शनि - मंगळ	
22/11/2029 14:07	
18/01/2030 22:30	
मंगळ	25/11/2029 22:24
राहु	04/12/2029 12:52
गुरु	12/12/2029 04:23
शनि	21/12/2029 06:19
बुध	29/12/2029 09:18
केतु	01/01/2030 17:35
शुक्र	11/01/2030 06:59
सूर्य	14/01/2030 03:48
चंद्र	18/01/2030 22:30

बुध - शनि - राहु	
18/01/2030 22:30	
15/06/2030 09:47	
राहु	10/02/2030 01:24
गुरु	01/03/2030 17:18
शनि	25/03/2030 01:41
बुध	14/04/2030 23:05
केतु	23/04/2030 13:32
शुक्र	18/05/2030 03:25
सूर्य	25/05/2030 12:23
चंद्र	06/06/2030 19:19
मंगळ	15/06/2030 09:47

बुध - शनि - गुरु	
15/06/2030 09:47	
24/10/2030 11:48	
गुरु	02/07/2030 21:15
शनि	23/07/2030 15:22
बुध	11/08/2030 05:03
केतु	18/08/2030 20:34
शुक्र	09/09/2030 16:54
सूर्य	16/09/2030 06:12
चंद्र	27/09/2030 04:22
मंगळ	04/10/2030 19:54
राहु	24/10/2030 11:48

केतु - केतु - केतु	
24/10/2030 11:48	
02/11/2030 04:36	
केतु	24/10/2030 23:59
शुक्र	26/10/2030 10:47
सूर्य	26/10/2030 21:13
चंद्र	27/10/2030 14:37
मंगळ	28/10/2030 02:48
राहु	29/10/2030 10:07
गुरु	30/10/2030 13:57
शनि	31/10/2030 23:01
बुध	02/11/2030 04:36

केतु - केतु - शुक्र	
02/11/2030 04:36	
27/11/2030 01:10	
शुक्र	06/11/2030 08:02
सूर्य	07/11/2030 13:51
चंद्र	09/11/2030 15:34
मंगळ	11/11/2030 02:22
राहु	14/11/2030 19:51
गुरु	18/11/2030 03:24
शनि	22/11/2030 01:51
बुध	25/11/2030 14:22
केतु	27/11/2030 01:10

केतु - केतु - सूर्य	
27/11/2030 01:10	
04/12/2030 12:09	
सूर्य	27/11/2030 10:07
चंद्र	28/11/2030 01:02
मंगळ	28/11/2030 11:28
राहु	29/11/2030 14:19
गुरु	30/11/2030 14:11
शनि	01/12/2030 18:31
बुध	02/12/2030 19:53
केतु	03/12/2030 06:19
शुक्र	04/12/2030 12:09

केतु - केतु - चंद्र	
04/12/2030 12:09	
16/12/2030 22:26	
चंद्र	05/12/2030 13:00
मंगळ	06/12/2030 06:24
राहु	08/12/2030 03:09
गुरु	09/12/2030 18:55
शनि	11/12/2030 18:09
बुध	13/12/2030 12:24
केतु	14/12/2030 05:48
शुक्र	16/12/2030 07:31
सूर्य	16/12/2030 22:26

केतु - केतु - मंगळ	
16/12/2030 22:26	
25/12/2030 15:14	
मंगळ	17/12/2030 10:37
राहु	18/12/2030 17:56
गुरु	19/12/2030 21:46
शनि	21/12/2030 06:50
बुध	22/12/2030 12:25
केतु	23/12/2030 00:36
शुक्र	24/12/2030 11:24
सूर्य	24/12/2030 21:50
चंद्र	25/12/2030 15:14

केतु - केतु - राहु	
25/12/2030 15:14	
17/01/2031 00:09	
राहु	28/12/2030 23:46
गुरु	31/12/2030 23:22
शनि	04/01/2031 12:22
बुध	07/01/2031 16:26
केतु	08/01/2031 23:45
शुक्र	12/01/2031 17:14
सूर्य	13/01/2031 20:05
चंद्र	15/01/2031 16:50
मंगळ	17/01/2031 00:09

केतु - केतु - गुरु	
17/01/2031 00:09	
05/02/2031 21:25	
गुरु	19/01/2031 15:47
शनि	22/01/2031 19:21
बुध	25/01/2031 14:58
केतु	26/01/2031 18:48
शुक्र	30/01/2031 02:21
सूर्य	31/01/2031 02:13
चंद्र	01/02/2031 17:59
मंगळ	02/02/2031 21:49
राहु	05/02/2031 21:25

योगिनी दशा

भोग्य दशा वेल : पिंगला 0 वर्ष 4 महिना 9 दिवस

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
22/07/1959		30/11/1959		30/11/1962		30/11/1966		30/11/1971	
30/11/1959		30/11/1962		30/11/1966		30/11/1971		30/11/1977	
	00/00/0000	धान्य	01/03/1960	भ्राम	11/05/1963	भद्रि	11/08/1967	उल्क	30/11/1972
	00/00/0000	भ्राम	30/06/1960	भद्रि	30/11/1963	उल्क	10/06/1968	सिद्ध	30/01/1974
	00/00/0000	भद्रि	30/11/1960	उल्क	31/07/1964	सिद्ध	31/05/1969	संक	01/06/1975
	00/00/0000	उल्क	31/05/1961	सिद्ध	11/05/1965	संक	11/07/1970	मंग	01/08/1975
	00/00/0000	सिद्ध	30/12/1961	संक	01/04/1966	मंग	31/08/1970	पिंग	30/11/1975
	22/07/1959	संक	31/08/1962	मंग	11/05/1966	पिंग	10/12/1970	धान्य	31/05/1976
संक	10/11/1959	मंग	30/09/1962	पिंग	31/07/1966	धान्य	11/05/1971	भ्राम	29/01/1977
मंग	30/11/1959	पिंग	30/11/1962	धान्य	30/11/1966	भ्राम	30/11/1971	भद्रि	30/11/1977

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
30/11/1977		30/11/1984		30/11/1992		30/11/1993		30/11/1995	
30/11/1984		30/11/1992		30/11/1993		30/11/1995		30/11/1998	
सिद्ध	11/04/1979	संक	10/09/1986	मंग	10/12/1992	पिंग	09/01/1994	धान्य	01/03/1996
संक	30/10/1980	मंग	30/11/1986	पिंग	30/12/1992	धान्य	11/03/1994	भ्राम	30/06/1996
मंग	09/01/1981	पिंग	11/05/1987	धान्य	29/01/1993	भ्राम	31/05/1994	भद्रि	30/11/1996
पिंग	31/05/1981	धान्य	10/01/1988	भ्राम	11/03/1993	भद्रि	10/09/1994	उल्क	31/05/1997
धान्य	30/12/1981	भ्राम	30/11/1988	भद्रि	01/05/1993	उल्क	10/01/1995	सिद्ध	30/12/1997
भ्राम	10/10/1982	भद्रि	09/01/1990	उल्क	01/07/1993	सिद्ध	01/06/1995	संक	31/08/1998
भद्रि	30/09/1983	उल्क	11/05/1991	सिद्ध	10/09/1993	संक	10/11/1995	मंग	30/09/1998
उल्क	30/11/1984	सिद्ध	30/11/1992	संक	30/11/1993	मंग	30/11/1995	पिंग	30/11/1998

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भ्रामरी : मंगल
भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते.
योगिनी दशा पूर्ण 36 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
30/11/1998		30/11/2002		30/11/2007		30/11/2013		30/11/2020	
30/11/2002		30/11/2007		30/11/2013		30/11/2020		30/11/2028	
भ्राम	11/05/1999	भद्रि	11/08/2003	उल्क	30/11/2008	सिद्ध	11/04/2015	संक	10/09/2022
भद्रि	30/11/1999	उल्क	10/06/2004	सिद्ध	30/01/2010	संक	30/10/2016	मंग	30/11/2022
उल्क	31/07/2000	सिद्ध	31/05/2005	संक	01/06/2011	मंग	09/01/2017	पिंग	11/05/2023
सिद्ध	11/05/2001	संक	11/07/2006	मंग	01/08/2011	पिंग	31/05/2017	धान्य	10/01/2024
संक	01/04/2002	मंग	31/08/2006	पिंग	30/11/2011	धान्य	30/12/2017	भ्राम	30/11/2024
मंग	11/05/2002	पिंग	10/12/2006	धान्य	31/05/2012	भ्राम	10/10/2018	भद्रि	09/01/2026
पिंग	31/07/2002	धान्य	11/05/2007	भ्राम	29/01/2013	भद्रि	30/09/2019	उल्क	11/05/2027
धान्य	30/11/2002	भ्राम	30/11/2007	भद्रि	30/11/2013	उल्क	30/11/2020	सिद्ध	30/11/2028

मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
30/11/2028		30/11/2029		30/11/2031		30/11/2034		30/11/2038	
30/11/2029		30/11/2031		30/11/2034		30/11/2038		30/11/2043	
मंग	10/12/2028	पिंग	09/01/2030	धान्य	01/03/2032	भ्राम	11/05/2035	भद्रि	11/08/2039
पिंग	30/12/2028	धान्य	11/03/2030	भ्राम	30/06/2032	भद्रि	30/11/2035	उल्क	10/06/2040
धान्य	29/01/2029	भ्राम	31/05/2030	भद्रि	30/11/2032	उल्क	31/07/2036	सिद्ध	31/05/2041
भ्राम	11/03/2029	भद्रि	10/09/2030	उल्क	31/05/2033	सिद्ध	11/05/2037	संक	11/07/2042
भद्रि	01/05/2029	उल्क	10/01/2031	सिद्ध	30/12/2033	संक	01/04/2038	मंग	31/08/2042
उल्क	01/07/2029	सिद्ध	01/06/2031	संक	31/08/2034	मंग	11/05/2038	पिंग	10/12/2042
सिद्ध	10/09/2029	संक	10/11/2031	मंग	30/09/2034	पिंग	31/07/2038	धान्य	11/05/2043
संक	30/11/2029	मंग	30/11/2031	पिंग	30/11/2034	धान्य	30/11/2038	भ्राम	30/11/2043

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
30/11/2043		30/11/2049		30/11/2056		30/11/2064		30/11/2065	
30/11/2049		30/11/2056		30/11/2064		30/11/2065		00/00/0000	
उल्क	30/11/2044	सिद्ध	11/04/2051	संक	10/09/2058	मंग	10/12/2064	पिंग	09/01/2066
सिद्ध	30/01/2046	संक	30/10/2052	मंग	30/11/2058	पिंग	30/12/2064	धान्य	11/03/2066
संक	01/06/2047	मंग	09/01/2053	पिंग	11/05/2059	धान्य	29/01/2065	भ्राम	31/05/2066
मंग	01/08/2047	पिंग	31/05/2053	धान्य	10/01/2060	भ्राम	11/03/2065	भद्रि	10/09/2066
पिंग	30/11/2047	धान्य	30/12/2053	भ्राम	30/11/2060	भद्रि	01/05/2065	उल्क	10/01/2067
धान्य	31/05/2048	भ्राम	10/10/2054	भद्रि	09/01/2062	उल्क	01/07/2065	सिद्ध	01/06/2067
भ्राम	29/01/2049	भद्रि	30/09/2055	उल्क	11/05/2063	सिद्ध	10/09/2065	संक	22/07/2067
भद्रि	30/11/2049	उल्क	30/11/2056	सिद्ध	30/11/2064	संक	30/11/2065		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	4
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 4, 6, 8
शत्रु अंक	3, 7,
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृषभ, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	88%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	73%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, दुर्घटणा पासून सुरक्षा, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	61%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	58%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	52%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
पुष्कराज	गुरु	47%	रोग, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
पोवले	मंगळ	44%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि

रत्न की शुभता

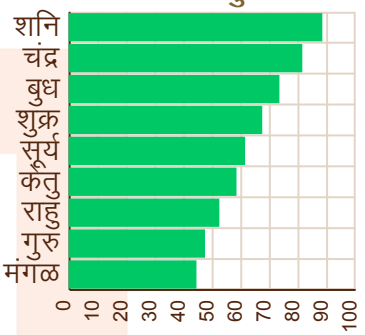

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगळ	23/10/1960	67%	88%	59%	61%	55%	67%	88%	29%	64%
राहु	24/10/1978	47%	69%	19%	73%	47%	73%	94%	64%	41%
गुरु	24/10/1994	67%	88%	53%	61%	61%	55%	88%	52%	58%
शनि	24/10/2013	47%	69%	19%	80%	47%	73%	100%	58%	41%
बुध	24/10/2030	67%	69%	44%	86%	47%	73%	88%	52%	58%
केतु	24/10/2037	47%	69%	53%	73%	47%	73%	75%	29%	71%
शुक्र	24/10/2057	47%	69%	44%	80%	47%	80%	94%	58%	64%
सूर्य	24/10/2063	73%	88%	53%	73%	55%	55%	75%	29%	41%
चंद्र	24/10/2073	67%	94%	44%	80%	47%	67%	88%	29%	41%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम व मोती रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, हीरा, माणिक्य, लहसुनिया एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख

के योग बनायेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः

काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न

माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप स्वयं को निरोगी बनाए रख सकते है। आपके अपने भाईयों से संबंध मधुर रहेंगे। यह रत्न आपको गुणवान और दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपको विद्या के कारण यश देगा। रत्न शुभता से आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। लहसुनिया रत्न आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद दिलाएगा। ननिहाल से आदर सम्मान प्राप्त होगा।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य,

नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। आप राहु ग्रह का गोमेद रत्न धारण करें। रत्न धारण कर आप उदारवादी, महत्वाकांक्षी और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप परिश्रम के दम पर सुखी रहेंगे। गोमेद रत्न धारण करने से आपके लिए आध्यात्मिक ज्ञान पाना एक सहज कार्य होगा। आपकी रुचि वेदों और वेदांतों में होगी और आप साधु स्वभाव वाले व्यक्ति बनेंगे। राहु प्रभाव आपके भाग्य में वृद्धि कर आपकी आय प्राप्ति के भरपूर अवसर देगा। इसके अलावा रत्न धारण के बाद आप विवेकहीनता, छल-कपट, पापपूर्ण विचारों, प्रपंच और नीचकर्म से बचेंगे।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका अंहकार भाव

सामान्य से अधिक बढ़ सकता है। पुखराज रत्न से आप को शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में रुचि की कमी हो सकती है। इसके अलावा आपका संतान सुख बाधित हो सकता है। झूठी अफवाहों के चलते आपके मान-सम्मान में कमी की स्थिति बन सकती है। रत्न प्रभाव से आपका उदारता भाव प्रभावित हो सकता है। आपके द्वारा ब्राह्मणों और देवताओं के सम्मान में कमी हो सकती है। तथा आप भौतिक सुखों की प्राप्ति के प्रति आकर्षित हो सकते है। तथा इसके कारण आपके शरीर में वात और श्लेष्मा जनित रोगों की उत्पत्ति सम्भव है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वादि-ववाद में सम्मिलित हो सकते है। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते है। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वादि-ववाद का कारण बन सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(24/10/2013 - 24/10/2030)

बुध की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मोती, माणिक्य, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(24/10/2030 - 24/10/2037)

केतु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(24/10/2037 - 24/10/2057)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(24/10/2057 - 24/10/2063)

सूर्य की दशा में आपका मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, पुखराज, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त

करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(24/10/2063 - 24/10/2073)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	27/01/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
चतुर्थस्थान चरण	28/04/1971-10/06/1973	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
चतुर्थस्थान चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
अष्टमस्थान चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थस्थान चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
अष्टमस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	सुख
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	शत्रु व रोग
चतुर्थस्थान चरण	सम	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
अष्टमस्थान चरण	अशुभ	कम खर्च

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय वर मंगळ चंद्र कुंडली मधे सप्तम भावात स्थित आहे, अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे तसेच कुंडलीत मंगल भंग नाय होत आहे, यामुळे यांचा प्रभाव पासून तुमची पत्नी चा स्वास्थ्य सामान्य तसेच स्वभाव उष्ण होणार. ज्या मुळे कधीं–मधीं परस्पर संबन्धातील मतभेद उत्पन्न होणार, पण ही काही थोडे वेळात रहणार आणि दांपत्य जीवना वर प्रभाव नाय होणार. तुम्हाला पित्त किंवा उष्णता वगेरे पासून काही त्रास होउ सकतात मंगळ चा प्रभाव तुमचे विवाह मधे काही उशीर करू सकतो तसेच काही गोष्ठ मधे अडचणे उत्पन्न करणार नंतर सफळता मिळेल आणि दांपत्य जीवन सामान्य सफल रहणार. सप्तम भावात मंगळ तुमचा स्वास्थ्य सामान्य ठेवणार तसेच कधीं–मधीं मनाचे त्रास पण होणार. दशम् भाव वर मंगळ ची. दृष्टि होण्या पासून आपण कार्य क्षेत्र मधे परिश्रम तसेच पराक्रम पासून सफळता अर्जित करणारे. तसेच समाजा मधे सामान्य सम्मान प्राप्त होणार, आणि लग्न वर दृष्टि पासून कुटुम्बाची सुख–शांति आणि समृद्धि मध्यम रहणारी तसेच कधीं–मधीं कुटुम्ब मधे मतभेद पण उत्पन्न होणार– ज्यामुळे कुटुम्ब शांति प्रभावित होणार पण विशेष प्रभाव कुटुम्ब मधे नाय होणार. अतः दांपत्य जीवन जास्ती सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला कोणी असी मांगळिक कन्या बरोबर विवाह कराय ला पाहिजे ज्या एवजी तुमचे मांगळिक दोष भंग होउ सकतात. या साठी कन्या ची कुंडली मधे मांगळिक भाव अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम एवं द्वादश भावात शनि तसेच राहु सारख्या पापी ग्रहां ची स्थिति होणार पाहिजे ह्या प्रकारी दोष भंग होण्या नंतर तुमचे अशुभ फळ घट होणार तसेच सुख सौभाग्य ऐश्वर्य वृद्धि होणारी आणि दांपत्य जीवन सफळ होणार. अतः पूर्ण समझून आखेर निर्णय कराय ला पाहिजे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंकविज्ञान फलित

तुमचा जन्म दिनांक बावीस आहे, दोन आणि दोन चा योग पासून अंक चार तुमचा नामांक आहे, अंक 2 चा स्वामी चन्द्र आणि अंक चार चा स्वामी हर्षळ आहे. भारतीय मतानुसार राहू आहे, चन्द्र हर्षल, किंवा राहू तुमचा नाव जीवन पर्यन्त प्रभावित करणार.` मूलांक स्वामी हर्षल किंवा राहू प्रभाव पासून एका–एकी उन्नति होणारी. विज्ञान क्षेत्रात असी सफळता भेंटणारी ज्या मधे उदार वैज्ञानिक होणारे. तुमची लक्ष्य वेगळी होणारी आणि आपण संघर्षवान होणारे म्हणून विरोधी पण उत्पन्न होणारे तसेच परिवर्तन पसंद करणारे. धन एकत्रित कराय ची तुलने ने, नाव यश, जास्ती प्राप्त होणार, सामाजिक परिवर्तन कराय चे समर्थक होणारे आणि संवय होणारी म्हणून चांगली ख्याती अर्जित करणारे. चन्द्र प्रभाव पासून आपण कल्पना शील रहणारे, शारीरिक कार्य चे तुलने ने मानसिक कार्य क्षेत्र जास्ती पसंद करणारे. चन्द्र चा स्वाभाव कमी–जास्ती होतात म्हणून कधी उच्चता कधी खालची स्थित होणारी कार्य लवकर करायची सवंय होणारी या मुळे कधीं–मधीं घाटे होउ सकतात. कोण पण प्रयोजने धैर्य आणि समझून शुरु करा असी संवय सफळ करणारी. या मधे काही उशीर होउ सकतात पण सफळते अवश्य देणार. लवकर करुन कार्य सिद्धी नाय होणारी आपण शीतरोग, रक्त दोष पासून कधीं–मधीं अजारी होउ सकतो.

भाग्यांक 8 चा स्वामी शनि ग्रह होतात, शनि ग्रह फार हळू होण्या मुळे 30 वर्ष मध्ये एक राशि पूर्ण करतात यांचा प्रभाव तुमचा भाग्योदय साठी हळू–हळू होणार. तुमी कोणी पण गरीवां चे घरी जन्म घेतला असेळ पण हळू–हळू भाग्योदय होउन जाणार या मधे अड़चणे पण येणारी असी अड़चने स्वतः चे श्रम आणि धैर्य पासून पार करणारे आळस्य आणि निराशा तुमची उन्नति ची बाधा होणारी पण विजय प्राप्ती साठी उन्नति पण होणारी.आपण स्वतः चा कार्य क्षेत्र मधे महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करणारे सर्व सफळता विध्न युक्त आहे पण स्वतः पासून तरक्की करणारे तुमचा भाग्योदय 35 वर्ष ची आयुष्य नंतर होणर. बाल पणा पेक्ष मध्य आणि आखेर आयुष्य भाग्योदय मधे सहायक होणार आखेर ची आयुष्य चांगळी होणार आणि धन सम्पत्ति प्राप्त करणारे.

तुमचा मूळांक 4 आहे आणि भाग्यांक 8 मूळांक 4 चा स्वामी हर्षळ आणि भाग्यांक 8 चा स्वामी शनि आहे हे दोघांचा सम्वन्ध मित्र चा सम्वन्ध आहे यांच्यां प्रभाव पूर्ण अनुकूळ फळ देणार. रोजगारांचा क्षेत्रातीळ हळू–हळू उन्नति होणार, आणि कार्य क्षेत्रातील फार श्रम आणि अड चने आहे आपळे सर्व कार्य फार हळू–हळू सम्पन्न होणार, नंतर स्थायी होणार, शुरुआती वेळ आर्थिक स्थिति लहान स्तर ची होणार आणि पुढ़े चांगळी स्थित होणारी, तुमचा मधे स्वाभिमान भरपूर आहे आणि स्वयं चा निर्मित सिद्धान्त वर चलणारे. तुमची सामाजिक स्थित चांगली रहणारी आणि समाजा चा मान सम्मान प्राप्त होइळ. आपळा भाग्योदय 26 वर्ष वर प्रारम्भ होउन 35 वर्ष ची आयुष्य वर विशेष उन्नति आणि 44 वर्ष ची आयुष्य वर पूर्ण भाग्योदय होणार. आपळे मूळांक 4 चा 1 आणि 8 मित्र आहे आणि भाग्यांक 8 चा 1 आणि 4 अतः आपळे जीवना मधे 1, 4, 8 अंक विशेष महत्वपूर्ण आहे, या मधे काही घटणे पण घटणारी. मूळांक आणि भाग्यांक मित्र आहे या मुळे भाग्यांक चा चा आपळे अनुकूळ होणार, आपळे जीवन ची प्रमुख घटणा असे अंका

ची तारीख मास ईस्वी, सन् किंवा आयुष्य चा वर्षा मधीं घटणार. जेह्वा कधी असे अंका ची तारीख, मास, ईस्वी, सह आपले निर्धारित शुभ वार पण मेळ करतात असा दिवस आपल्या साठी विशेष शुभ आहे. तसेच कोणी पण कार्य पत्र लेखन, किंवा नीवन कार्य शुरु कराय साठी आणि मोठे अधिकारयांचा भेंट शुभ होणार. आपळे आयुष्य चा गेलेला दिवसा चा अवलोकन करा असे अंका सम्वन्धातीळ विशेष घटणे झाळी होतो. गेळेला दिवसा मधीं सर्व अंका चा निरीक्षण करा नंतर ज्या अंक आपळे अनुकूल ठरतो असे अंका चे आधार वर आपळे विशेष योजने ठेवा. आपळे जनवरी, अप्रैल, अगस्त चा महिना विशेष घटना क्रमा चा महिना आहे, कोणी पण नवीन कार्य किंवा महिना मधे शुरु करा जेह्वा दिवस, तारीख, मास आपळे मूळांक आणि भाग्यांक चा अंक अनुकूल असेळ. मूळांक 4 आणि भाग्यांक 8 चे प्रभावांनी ईस्वी, सन् यांचे योग– 1, 4, 8 आहे, हे अंक आपल्या साठी शुभ आहे. 1 – 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73. 4 – 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76. 8 – 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80वर दिलेला आपळे आयुष्य चा परिवर्तनशीळ वर्ष असेळ आणि असे वर्षां मधे प्रमुख घटणे घटणारी ज्या मुळे जीवना ला दशा वदलणार आणि घटणे घटणार काही घटणे स्मारक होणारी.

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म तूळ लग्नामध्ये झाला आहे, त्यामुळे आपले शरीर निरोगी, सुडौल व आकर्षक असेल. स्वभावाने नरम असाल आणि बोलताना प्रयत्नपूर्वक गोड शब्दांचा वापर कराल. हास्यप्रिय व्यक्ती असून मुलांचे तीव्र आकर्षण असेल. सुंदर वस्तू, सुंदर घ्श्ये पाहून आपल्याला हार्दिक प्रसन्न वाटते. कधी कधी एकदम संतापला तरीही लगेच शांतसुद्धा होता. आपल्या व्यक्तिमत्वाचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे कधीही कोणाला दु:ख देत नाही, अगदी प्रबळ शत्रूशी सुद्धा आपला व्यवहार नरम व कोमल असेल. या गुणामुळे समाजामध्ये लोकप्रिय असाल आणि सर्व लोक आपल्याला यथोचित सन्मान देतील. विद्वान व्यक्ती असाल आणि सत्कर्मांमधून उदरनिर्वाह करण्याचा प्रयत्न कराल. कलाकुशलतेमध्ये विशेष रस असेल आणि कलात्मकतेशी भावनात्मक संबंध असेल. नीतीने काम करण्याकडे कल राहील.

आपली सर्व शुभ व महत्वाची कामे नीतीनुसारच संपन्न करण्याचा प्रयत्न कराल. नवनवीन गोष्टी समजून घेण्यामध्ये रूची असेल आणि एखादा नवीन सिद्धांतसुद्धा प्रतिपादित करू शकता. मानसिक शक्ती प्रबळ असेल आणि आपली कामे तत्परतेने कराल, पण एखाद्या विशिष्ट सिद्धांताला चिकटून राहणार नाही तर त्यामध्ये काळानुरूप बदल करत राहाल. भावंडे तसेच नातेवाईकांना पूर्ण सुख व सहयोग द्याल, पण त्यांच्याकडून आपण विशेष सुख, मदत अपेक्षित करू नये.

राजकारणात विशिष्ट यश मिळवू शकता, कारण नेतृत्व गुण आपल्यात आहेत आणि आपल्या अनुयायांना आपल्या नैतिकतेच्या दिशेने नेण्यास समर्थ असाल. दर्शनशास्त्र तसेच अध्यात्मात रूची राहील. बुद्धिमत्ता तीव्र असल्याने कोणत्याही गोष्टीच्या अंतपर्यंत जाण्यास समर्थ असाल. शत्रूला आपल्या बुद्धिच्या जोरावर पराजित करण्यास समर्थ असाल. साधू–संतांवर विशेष श्रद्धा असाल आणि व्यापार किंवा न्यायसंबंधी कामात लाभ प्राप्त होईल. घष्टिकोन विशाल असल्याने समाज यथायोग्य सन्मान देईल. भेदभाव दूर करून सर्वांशी समान वर्तणूक कराल. आपल्या व्यक्तिमत्वात भावुकता व संवेदनशीलता स्पष्ट दिसते. आपल्या कुटुंब किंवा कुळामध्ये श्रेष्ठ असाल आणि स्थिर धनवैभव व ऐश्वर्याने संपन्न असाल.

अशाप्रकारे शांतीप्रिय, नेता, संत, सर्वप्रिय न्यायी व संवेदनशीलतेने युक्त राहून काळ घालवाल. यथोक्तम–

गुशाधिकत्वाद द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मअयतिनैपुणत्वम।
पद्मालया तन्निलये न लालालग्न तुला चेत्स कुलावतंस।।

– जातकाभरणम

म्हणजे तूळ लग्नामध्ये जन्म झालेला जातक व्यापार कुशल, धनवान, स्थिरलक्ष्मीयुक्त व कुळामध्ये श्रेष्ठ असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये मंगळाची राशी वृश्चिक उदित होती. याच्या प्रभावामुळे स्वकर्तृत्व व कष्टाने धनार्जन करण्यात समर्थ असाल. पैतृक संपत्ती कमी मिळेल, पण बहुमूल्य रत्न व धातू स्वकर्तृत्वाने प्राप्त कराल. मालमत्ता किंवा भूमिसंबंधी क्रय विक्रयामध्ये रस असून त्यातून भरपूर लाभ होईल. एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असून कुटुंबाच्या मदतीने आयुष्यात अपेक्षित प्रगती व सन्मान प्राप्त कराल. पण संकटकाळी स्वतःला सांभाळण्यास कमी पडाल.

कुटुंबाला आनंदी व सुविधा पुरवण्यासाठी आपण सतत प्रयत्नरत राहाल आणि कौटुंबिक शांती व सुखसुविधांवर पुष्कळ खर्च कराल. वाणी प्रभावी असेल आणि इतरांना तर्कपूर्ण बोलण्यातून प्रभावीत कराल. मिष्ठान्न आवडते आणि प्रौढावस्थेत डोळ्यांचे विकार होऊ शकतात. धार्मिक परंपरांचे पालन कराल. सज्जनाच्या प्रति मनामध्ये नेहमी आदर असेल.

पराक्रम, संबंधी, प्रकाशन, लाहान–प्रवासं

आपल्या जन्मसमयी तृतीय भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपली स्मरणशक्ती उत्तम राहील आणि कोणतीही वस्तू दीर्घकाळ स्मरणात ठेवू शकाल. भावंडे असतील आणि आयुष्यात त्यांचे सुख व सहयोग मिळेल. आपल्याशी कर्तव्यपरायण विश्वासपात्र असतील. कौटुंबिक सुखासाठी त्यांना सांभाळून घ्याल. सत्यावर तुमची आस्था असेल आणि कितीही संकटे किंवा समस्या आल्या तरी आपल्या सिद्धांताशी पक्के राहाल. स्पष्टवक्ते असल्याने जे योग्य असेल ते परिणामाची पर्वा न करता सर्वांसमक्ष मांडाल.

आपण एक साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असून नेतृत्वगुणसुद्धा असतील. तसेच कोणतीही व्यक्ती किंवा वस्तूचे गुणावगुणांची परीक्षा करून मगच त्याबद्दल आपले मत व्यक्त कराल. सद्विचारी तसेच धार्मिक विचारांचाही प्रभाव आपल्यावर असेल. आधुनिक संचार संसाधने प्राप्त करून सुखाने उपभोग घ्याल. संगीत, हस्तकलेकडे सुद्धा आपला ओढा असल्याने कधी कधी त्यातसुद्धा आपला वेळ घालवाल. आपल्या लघुदीर्घ यात्रा होत राहतील आणि त्यातून वांछित लाभ होत राहील. अभ्यासामध्ये रूची असेल आणि धार्मिक ग्रंथ, साहित्य तसेच वैज्ञानिक पुस्तकांचे रूचीने अभ्यास कराल. याव्यतिरिक्त आपण एखाद्या संस्थेचे पदाधिकारी व दयाळू असून त्यामुळे समाजात सन्माननीय समजले जाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुमची आई आधुनिक विचारांची असेल आणि कुटुंबाला वाहून घेतलेली असेल. कुटुंब सदस्यांची खूप सेवा करेल तसेच स्वादिष्ट भोजन करून तुम्हा सर्वांना खाऊ घालण्यात तिला आनंद वाटत असेल. काटकसरी असेल आणि कुटुंबाचा खर्च कमीत कमी करण्याचा प्रयत्न असेल. खूप कष्टाळू असेल, वृद्धावस्थेत शारीरिक कष्ट होण्याचा संभव आहे. तुमच्या वडिलांसाठी आदर्श जोडीदार असेल आणि त्यांच्या प्रत्येक कामात आपला सहभाग दर्शवेल.

आपल्यापाशी सुंदर, आकर्षक व आरामदायक घर असेल आणि त्यामध्ये आधुनिक सुख सुविधांची सर्व उपकरणे असतील. वडिलांकडून वाहनसुख प्राप्तीसुद्धा होईल. पैतृक संपत्ती मिळेल, पण त्यातून वाद होतील, त्यामुळे ती संपत्तीपासून दूर जाण्याचा प्रयत्न कराल.

शैक्षणिक क्षेत्रात आपल्याला यश मिळेल. उच्च तसेच स्पर्धात्मक परिक्षांमध्ये अपेक्षित यश मिळेल. सरकार किंवा सरकारी उद्योगांमध्ये व्यवस्थापक किंवा प्रशासक म्हणून काम कराल. गुप्त धन किंवा विद्यासुद्धा प्राप्त होतील आणि ज्योतिष, तंत्र, मंत्राचे ज्ञान असेल. गणित, साहित्य किंवा मानसशास्त्राचे सुद्धा आपण ज्ञान ग्रहण कराल. पाण्यासंबंधी कार्यातून सुख तसेच मित्रांपासून लाभ होईल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि शिक्षणाला नेहमी प्राधान्य द्याल. जीवनसाथी म्हणून आपण बुद्धिमान व शिक्षित पत्नीला पसंत कराल. प्रेमभावना मनामध्येच ठेवून त्याचे प्रदर्शन कमीच कराल. त्यामुळे काहीवेळा तुम्ही अडचणीत सापडाल. पत्नीकडून पूर्ण सहकार्य लाभेल आणि कुटुंबकर्तव्यांचे पूर्ण पालन कराल.

संतती लाभेल आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहकार्य आयुष्यभर लाभेल. तुमच्याकडे त्यांची ओढ असेल. आपल्याला यथोचित मान व आदर देतील आणि आपली सेवा करणे आपले कर्तव्य समजतील. तुम्हीसुद्धा त्यांचे शिक्षणाची पूर्ण व्यवस्था कराल आणि त्यांच्यात साहस, निर्भयता, पराक्रम व आत्मविश्वास जागृत ठेवाल. उत्साहवर्धक विचार त्यांच्यामध्ये पेराल. या सर्व गुणांमुळे संतान सर्वत्र यश प्राप्त करेल. वैदिक साहित्य तसेच ज्ञानार्जनामध्ये ओढ असेल आणि परिश्रमपूर्वक ज्योतिषसंबंधी ज्ञान प्राप्त करेल. जुन्या रीतीरिवाजांचे पालन कराल, पूर्वजन्मावर विश्वास असेल. याव्यतिरिक्त धैर्यवान, गंभीर प्रकृति, सत्यवक्ता, प्रसिद्ध, स्वकल्याणासाठी कष्ट सहन करणारे आणि पुण्यवान असाल.

रोग, शत्रु, सेवक आणि मामा

आपल्या जन्मसमयी षष्ठ भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपल्याला आयुष्यात एखाद्या उच्चाधिकारी व्यक्तीकडून विरोध सहन करावा लागेल आणि आपले शत्रूसुद्धा तुमचा सामाजिक मानसन्मान कमी करण्यासाठी प्रयत्न करत राहील. त्यामुळे समाजामध्ये आपला प्रभाव कमी राहील. आपले सेवक आज्ञाकारी व विश्वासपात्र असतील आणि प्रामाणिकपणे तुमची सेवा करण्यास तत्पर असतील, पण जर आपण त्यांना अपेक्षित मानधन दिले नाही तर घरामध्ये चोरीसुद्धा करू शकतात, त्यामुळे अशा समस्या वेळ्यावेळी सोडवाव्यात.

अधिकाधिक पैसा कमवण्याची वृत्ती असेल, त्याचबरोबर गुंतवणूकसुद्धा कराल. पण यातून हानी झाल्यास कर्ज घ्यावे लागेल आणि कर्ज देणारे विशेष मदत न केल्याने तुमच्या आत्मसन्मानाला ठेच पोचू शकते. यासाठी धनव्यय किंवा गुंतवणुकीच्या बाबतीत बुद्धिमत्ता व सतर्क राहावे. त्याचबरोबर भावंडे किंवा नातेवाईकसुद्धा संधी मिळताच आर्थिक बाबतीत हानी करू शकतात. अशावेळी शहाणपणाने काम करावे.

आयुष्यात नातेवाईक किंवा इतरेजनांशी आर्थिक, जमीन मालमत्तासंबंधित किंवा काही फौजदारी कोर्टकचेरी होण्याचा संभव आहे. त्याचबरोबर दाम्पत्य जीवनामधील माधुर्य कमी होऊ शकते. मामा–मामीशी खास संबंध आणि परस्पर विशेष सहयोग असणार नाही. शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम ठेवण्यासाठी खाण्या–पिण्याकडे योग्य ते ध्यान द्यावे. अतिशय गंभीर समस्येला तोंड देण्याचा प्रसंग आल्यास त्यातून शांती व यश मिळण्यासाठी गुप्त पूजा ६ अर्चनेसारखी गूढ कार्य कराल किंवा सूड भावनेने कठोर पावले उचलाल, ज्यातून तुम्हाला न्यूनाधिक लाभ व यश प्राप्त होईल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी आकर्षक तसेच सुशील स्वभावाची असेल. जरी कधी कधी उग्र रूप धारण केले तरी तात्काळ शांतसुद्धा होईल. त्यामुळे दाम्पत्य जीवनावर विशेष प्रभाव पडणार नाही. पण ती आधुनिक विचारांची स्त्री असू शकते, आणि आपल्या कूटनीति व शांत स्वभावाने कुटुंबामध्ये परस्पर सामंजस्य स्थापन करेल.

आपल्याला सामाजिक कामे आवडतात. त्याचबरोबर कौटुंबिक वातावरण सुख व शांत असेल. आपल्याला उंची राहणीमान आवडत असल्याने ते प्राप्त करण्यासाठी कायम प्रयत्नशील राहाल. तुम्ही नेहमी प्रसन्न, शृंगारप्रिय व परस्पर सामंजस्य ठेवण्याचा प्रयत्न करत असल्याने पत्नी व कुटुंबातील इतर सदस्यांना सुख, आराम व इतर गरजा पूर्ण करण्यास तत्पर असाल. बुद्धिमान व चतुर व्यक्ती असल्याने तर्कापेक्षा शांतपणे कोणत्याही विषयी निर्णय घ्याल. आपल्याला चांगले कपडे, खाणे, हॉटेल तसेच क्लबमध्ये जाणे आवडते तसेच विसरा आणि क्षमा करा या सिद्धांतानुसार वागता. तुमच्यासाठी कन्या, कुंभ लग्नाचे जातक अनुकूल असतील. कर्क व मकर राशीच्या व्यक्तींशी संबंध ठेवताना काळजी घ्यावी. आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रात यश मिळवाल. द्रव्यासंबंधी, केमिस्ट, इंजीनिअरिंग, ट्रान्सपोर्ट, पेंटिंग किंवा कलेच्या क्षेत्रात यश प्राप्त करू शकता. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी सुस्वभावी व धनार्जन करण्यास तत्पर असेल आणि आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग देईल.

हुण्डा, बीमा आयुष्य आणि आपघात

आपल्या जन्मसमयी अष्टम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्यामध्ये आध्यात्मिक शक्ती असेल. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्र, मंत्रादि मध्ये श्रद्धा असेल आणि कष्टाने यांचे ज्ञान प्राप्त कराल. आपल्यामध्ये सक्रीयतेची प्रबळ भावना तसेच प्रतिभासुद्धा असल्याने कोणतेही सृजनात्मक कार्य इतरांपेक्षा तुम्ही सहजपणे करू शकता. ज्योतिषादि क्षेत्रामध्ये आपल्या खूप प्रगती व लाभ प्राप्त करू शकाल व त्यात कीर्तीसुद्धा मिळवू शकाल. आपल्याला मित्र किंवा भावंडांद्वारे मालमत्तेसंबंधी लाभाचा योग बनतो. त्याचबरोबर पैतृक संपत्तीसुद्धा थोडीअधिक प्राप्त होऊ शकते. मालमत्ता तसेच चल अचल संपत्तीद्वारे समाजामध्ये आपल्याला अपेक्षित आदर व सन्मान प्राप्त होईल. अशाप्रकारे आपण एक वैभवशाली पुरूष समजले जाल.

विवाहाच्या वेळी आपल्याला अपेक्षेप्रमाणे धन किंवा भेटवस्तू प्राप्त होतील. आपले घर सुंदर सजावटीने सजवाल. विम्यातून लाभ होऊ शकत असल्याने अवश्य वीमा करावा. आपल्या सतर्क वृत्तीमुळे आयुष्यामध्ये दुर्घटना होणार नसली तरी वेगाने वाहन चालवू नये. आयुष्य भरपूर लाभेल व सुखाने जगाल.

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा आणि लाम–प्रवास

आपल्या जन्मसमयी नवम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक धार्मिक वृत्तीची व्यक्ती असाल आणि कौटुंबिक नियमांचे पालन करत राहाल. भौतिक सुखाच्या प्राप्तीसाठी प्रयत्नरत राहाल. परमेश्वरावर पूर्ण श्रद्धा असेल आणि भाग्याने आयुष्यात धनऐश्वर्य प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. संधी मिळेल तेव्हा तीर्थयात्रा कराल व आपल्याला लोक धर्मनिष्ठ व्यक्ती समजतील.

विभिन्न धर्मांवरील लिखाणाचे रूचीने अध्ययन कराल. त्याचबरोबर ध्यान योग, तंत्र व अध्यात्मावर आपला विश्वास राहील आणि तत्संबंधित विषयांचे वेळोवेळी अध्ययन करून ज्ञानार्जन कराल. जर आपण घ्ढ संकल्पामध्ये वृद्धि करू शकलात तर आपल्यामध्ये अंतप्रज्ञा शक्ती वाढेल व त्यातून पूर्वानुमान व भविष्यवाणी करू शकाल.

दैनिक पूजाअर्चा आयुष्यात ऐश्वर्य प्रदान करण्याची शक्ती देईल, पण काहीवेळा मानसिक असंतुलनामुळे अडचणींना तोंड द्यावे लागेल. त्याचबरोबर पूजाकार्यामध्ये सुद्धा वेळोवेळी अडथळे येतील. व्यावसायिकघ्ष्ट्या केल्या गेलेल्या दूरच्या प्रवासातून आपल्याला लाभ, यश व समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होईल. त्यातून स्थैर्य येऊन धनवैभव वाढेल. आपण एक प्रसिद्ध, बुद्धिमान व विद्वान व्यक्ती असाल आणि आपल्या योजना कोणाचाही सल्ला न घेता संपन्न कराल. आपल्या पहिल्या नातवापासून अत्यधिक सुख व आनंद प्राप्त कराल. शुभ कार्य करत राहाल. याव्यतिरिक्त धर्मात्मा, सौभाग्यशाली, अतिथी सत्कार करणारे व गरीबांवर कृपा करणारे असून परोपकारासंबंधी कार्य पूर्ण करण्यात सफल व्हाल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य उत्तम राहील व मानसिकघ्ष्ट्या ते शांत स्वभावाचे असतील. ते परिवर्तन व प्रवासप्रेमी असतील. सामाजिक कार्यामध्येसुद्धा त्यांना रूची असेल. ते भावूक व सहानुभूतीयुक्त असतील तसेच स्मरणशक्ती उत्तम असेल.

सरकार व सरकारी कर्मचाऱ्यांकडून आपल्याला अपेक्षित सहकार्य प्राप्त होईल, त्याचबरोबर वित्त व सामाजिक क्षेत्रात कार्यरत राहिल्यास यश प्राप्त कराल. कायदा किंवा वकिलीसंबंधी व्यवसाय आपल्यासाठी उत्तम असेल. त्याचबरोबर पाण्यासंबंधी व्यवसायातूनही लाभ होतील. तसेच रासायनिक क्षेत्र, लेखक, संगीतज्ञ, गायक, वास्तुकला व विक्रेत्याच्या रूपाने आपले कार्य प्रारंभ होईल व त्यात अपेक्षित प्रगती व यश प्राप्त कराल. त्यामुळे उत्तम भवितव्यासाठी आपण यापैकीच एखाद्या व्यवसायाची निवड करावी. मध्यमायुमध्ये आपल्याला अपेक्षित प्रगती, यश व कीर्ती प्राप्त कराल. राजकारणात रूची राहील किंवा राजकीय नेत्यांशी तसेच सरकारी उच्चाधिकाऱ्यांशी चांगले संबंध असतील व वेळोवेळी आपल्याला अपेक्षित लाभ व सहकार्य मिळेल. कोर्टकचेरीत यश मिळेल. याव्यतिरिक्त आपण पुण्यवान, धार्मिक, दयाळू, विनम्र व शांत वृत्तीची व्यक्ती असाल.

लाभ, मित्र, समाज, मोठा भाऊ आणि आकांक्षा

आपल्या जन्मसमयी एकादश भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक भाग्यवान व्यक्ती असाल आणि धनार्जन उत्तम असेल. आपण एक अति महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि मनामध्ये अनेक इच्छा आकांक्षा असतील. आणि सौभाग्याने त्या पूर्ण करण्यास समर्थ असाल. आपल्याला सरकार, औषधिविज्ञान व वडिलांमार्फत आयुष्यात विशेष रूपाने लाभ होईल व त्यांच्याद्वारे आपल्या आयस्रोतांमध्ये वृद्धि होईल. अशाप्रकारे लाभाच्या घ्ष्टीने आपण नेहमी प्रगतीच्या दिशेने अग्रेसर असाल. मोठ्या भावंडांपासून आयुष्यभर पूर्ण लाभ, सुख, सहयोग व प्रेम प्राप्त होईल.

मित्रांचा आपला पूर्ण विश्वास असेल आणि त्यांच्यामध्ये आपल्याला मानसन्मान व आदर प्राप्त होईल. सर्व मित्र सुशिक्षित व बुद्धिमान असतील. सामाजिक व्यक्ती असल्याने समूहामध्ये मनोरंजन किंवा इतर कार्य करणे आपल्याला आनंददायक वाटेल व समाजाची सेवा व भले करण्यास तत्पर असाल व आयुष्यात विशिष्ट मानसन्मान व कीर्ती प्राप्त कराल. आपल्या आरोग्य सामान्यपणे चांगले राहील पण कधी कधी उष्णता किंवा पित्तदोषामुळे अस्वस्थ वाटू शकते. याचा फारसा दुष्प्रभाव होणार नाही.

घाटे, बन्धन, कर्जे, आवास परिवर्तन आणि मोक्ष

आपल्या जन्मसमयी द्वादश भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण आर्थिक घ्ष्टीने संपन्न व समृद्ध असाल. आयुष्यात अनेक साधनांनी भरपूर धन प्राप्त कराल. पण आपले राहणीमान, खाणे–पिणे उच्चस्तरीय असल्याने बचत कमी होऊन खर्च अधिक होईल. आपण भौतिक सुखसाधनांवर व उपकरणांवर खर्च कराल तसेच कपडेसुद्धा सुंदर व किंमती असतील व किंमती कपडे घालून समाजामध्ये आपले ऐश्वर्य दाखवाल.

आपले कौटुंबिक जीवन सुख व शांत असेल तसेच घर सुंदर व सुसज्जित असेल व त्याच्या सजावटीसाठी खूप खर्च कराल. वास्तवात आपल्याला कलात्मक रूपात राहाणे आवडते त्यासाठी खूप पैशाची गरज असते. सुंदर व विलासी वस्तूंची तीव्र रूची राहील व त्या प्राप्त करण्यासाठी हवातसा पैसा खर्च कराल. त्याचबरोबर कुटुंब व मित्रांबरोबर महागड्या हॉटेलमध्ये खाण्याचा शौक असेल. आपले यश पाहून आपले शत्रू अडथळे निर्माण करतील. त्यामुळे कधी कधी मानसिकघ्ष्ट्या तणावग्रस्त राहाल.

प्रवास आवडतो. देश विदेशामध्ये प्रवास करून त्यातून उचित लाभ व सन्मान प्राप्त कराल. यामध्ये खर्च जरी खूप झाला तरी काही काळानंतर लाभ होतील. पर्यटन व कामानिमित्त प्रवास कराल. विदेशामध्ये सुद्धा प्रवास कराल.

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु प्रथम भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण बुध दशम् भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार. नौकरी मधे पदोन्नति आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती रहणारी आणि सहयोग प्रदान करणारे तसेच कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धी

होणारी आणि समाज प्रभावित होणार. अतः आपण समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

गोचरीने यंदा राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीह व मानसिकदृष्टया पण स्वस्यता असेळ. ह्या काळात तुम्ही परदेशी जाळ किंवा दूरचे प्रवास कराळ. ह्या काळात प्रवासावर जास्त खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीवर जास्त लक्ष द्याळ. ह्या वर्षी आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. केतूच्या प्रभवाने शत्रूवर विजय मिळवाळ. समाजत ळोक तुमचे प्रभुत्व स्वीकारातीळ. ज्यामुळे प्रतिष्ठा वाढेळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. ह्याशिवाय गोचर व दशा ह्या काळात शुभ असल्याने वर्ष चांगळे जाईळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु प्रथम भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण बुध दशम् भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपूर्ण रहणार उज्वल भविष्य साठी असे समय वर नवीन प्रयोजने निर्माण करणारे. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी तसेच मिळकत वृद्धी होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार धर्म, दर्शन शास्त्र वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी आणि धार्मिक प्रवास करणारे. विद्वान आणि विशेष माणूष बरोवर सम्पर्क स्थापित होणारे अतः असे समय वर प्रयत्न क न समय सदुपयोग कराय ला पाहिजे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात इच्छित उन्नती व सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदोन्नती होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. तुमचे यश दूरवर पसरेळ. आर्थिकदृष्टया हा काळ चांगळा असून धनवृद्धी होईळ. व आर्थिक सुदृढ़ता असेळ. मुळांच्या बाबतीत संतुष्टी असेळ. वेळप्रसंगी अधिक खर्च पण संभवतो. पण या काळात अन्य गोचर व दशा शुभ फळे देईळ. त्यामुळे शुभ फळांची अधिक प्राप्ती होईळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ बुध ची महादशा मधीं गुरु चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति केतु ची महादशा मधीं केतु चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी षष्ठ भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल आहे अतः सर्व कार्य शुभ आणि सिद्ध होणारे. व्यापार मधे लाभ होणार ब्यवहार चांगला रहणार तसेच समाजातीळ सम्मान प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार. मोठे अधिकारंया बरोवर सम्पर्क स्थापित होणार आणि लाभ सहयोग प्राप्त होणार धार्मिक कार्य मधे चि उत्पन्न होणारी कुटुम्ब प्रगति मार्ग वर चलणार. शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी. अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य,

कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

ह्या वर्षी शनी गोचरीने तिसऱ्या भावात आहे. म्हणून हा काळ शुभकारक आहे. ह्या काळात अडळे ळी व महत्वाची सर्व कार्ये पूर्ण होतीळ. त्याचबरोबर व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नती होईळ. ज्यामुळे भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा दूरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून इच्छित ळाभ व सन्मान मिळेळ. नोकरीत बदतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर प्रतिकूळ असळे तरी दशा शुभ असेळ. त्यामुळे वेळप्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमतरता भासेळ. तरी सामान्यतः हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी षष्ठ भावात मीन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु नवम भावात आहे. म्हणून हे वर्ष भाग्यकारक असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ व परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. यंदा चांगळी व महत्वाची ळांबळेळी कार्ये होतीळ व व्यापार किंवा नोकरीत ळाभदायक योजनांची सुखात होईळ. त्याचबरोबर नोकरी किंवा राजकारणात महत्वाचे पद मिळेळ. समाजात मान–सन्मान व प्रतिष्ठा वाढेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात धनळाभ होईळ. उपर्युक्त चांगल्या फळात वेळप्रसंगी कमतरता जाणवेळ. पण सामान्यतः परिणाम चांगळे असतीळ.

गोचरीने यंदा शनी चवथ्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. सांसारिक कार्ये परिभमाने संपन्न कराळ. भावंड व कुटुंबाकडून कमीअधिक प्रमाणात सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती पण मध्यम असेळ. आर्थिक परिस्थिती सामान्य असेळ व धनप्राप्ती बरोबरच खर्च पण होतीळ. पण आर्थिक परिस्थितीवर त्याचा विशेष परिणाम होणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत प्रगती होईळ. कर्ज होऊन तुम्ही घर बांधू शकता. जयामुळे सध्या अडचणी येतीळ पण भविष्यात ळाभ होईळ.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ असेळ पण दशाफळ विशेष अनुकूळ नसेळ. शनीच्या प्रभावामुळे वेळप्रसंगी महत्वाच्या कामात अडचणी येऊ शकतात. ज्यामुळे मानसिक ताण येईळ. म्हणून अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होऊन शुभता वाढेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी षष्ठ भावात मीन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2031

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने यंदा शनी चवथ्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. सांसारिक कार्ये परिभमाने संपन्न कराळ. भावंड व कुटुंबाकडून कमीअधिक प्रमाणात सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती पण मध्यम असेळ. आर्थिक परिस्थिती सामान्य असेळ व धनप्राप्ती बरोबरच खर्च पण होतीळ. पण आर्थिक परिस्थितीवर त्याचा विशेष परिणाम होणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत प्रगती होईळ. कर्ज होऊन तुम्ही घर बांधू शकता. जयामुळे सध्या अडचणी येतीळ पण भविष्यात ळाभ होईळ.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ असेळ पण दशाफळ विशेष अनुकूळ नसेळ. शनीच्या प्रभावामुळे वेळप्रसंगी महत्वाच्या कामात अडचणी येऊ शकतात. ज्यामुळे मानसिक ताण येईळ. म्हणून अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होऊन शुभता वाढेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

केतु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 22/03/2031 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु षष्ठ भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र एकादश भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही

तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2032

यंदा गुरु गोचरीने बाराव्या भावात असेळ. तुमचे शरीरस्वास्थ्य चांगळे असेळ पण मानसिकदृष्टया उद्विग्नता राहीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असळे तरी खर्च अधिक असतीळ. यंदा चांगल्या कार्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत परिश्रम करावे ळागतीळ पण सफळता मिळेळ. ह्या काळात प्रवास संभवतात. पण त्यावर खर्च अधिक होईळ. भविष्याकरता काही चांगळे संबंध बनतीळ ज्यापासून ळाभ मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ अनुकूळ असेळ ज्यामुळे कष्ट व पराक्रमाने महत्वाच्या कामात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर खर्चाबरोबरच धनप्राप्ती पण होईळ. ज्यामुळे शांति अनुभवाळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष शुक्र चा अंतर 21/05/2032 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 26/09/2032 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर चन्द्र ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी षष्ठ भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः ह्या वेळी तुमची महत्वाकांक्षा पूर्ण होणारी. व्यापार मधे इच्छित परिणाम भेंटणार नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार आणि पदोन्नति होऊ सकतो. कुटुम्ब सुख शान्ती मधे वृद्धी आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार आणि सहयोग भेंटणार. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होउ सकतो काही विशिष्ट माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार आणि वांछित सहयोग भेटणार. अतः

समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी अत्यंत शुभ आणि महत्व पूर्ण आहे अतः साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. उत्तम कार्य पासून समाज प्रभावित होणार आणि सम्मान प्रदान करणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार आणि सहयोग संवन्ध, स्थापित होणार. सूर्य अंतर्दशा मधे आपण नेहमी मान सम्मान आणि यश प्राप्त करणारे मित्र पासून वांछित लाभ प्राप्त होणार तसेच उच्च पद प्राप्त होणार. कोणी प्रतियागिता परीक्षा मधे सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगरे मधे लाभ आणि सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगेरे मधे लाभ आणि सफलता प्राप्त होणारी कुटुम्ब सुख, समृद्धी आणि शान्ती प्राप्त होणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, अतः आपण सफळता अर्जित करणारे. वौद्धिक आध्यातमिक क्षेत्र मधे चि होणारी आणि उन्नती पण. मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार. आर्थिक स्थित आणि सम्मान यश समाजातीळ प्राप्त क न प्रगति करणारे. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी. आणि परस्पर सहयोग प्राप्त होणार. कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार प्रवास पासून फायदे होणार मित्र आणि सम्बन्धी सहयोग करणारे शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी आणि प्रतियोगी परीक्षा मधे सफळता प्राप्त होउ सकतो.

फलादेश - 2033

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष चन्द्र चा अंतर 27/04/2033 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 23/09/2033 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर राहु ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी षष्ठ भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी उन्नति करणार समय आहे अतः महत्वाकांक्षा पूर्ण होणारी. तसेच रचनात्मक कार्य मधे चि उत्पन्न होणारी आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार. नवीन कार्य शु होउ सकतो, नोकरी मधे उन्नती होणारी मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध

स्थापित होणार तसेच समाजातीळ यश, सम्मान प्राप्त होणार. प्रवास मधे आणि प्रवास पासून लाभ होउ सकतो आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः आपण समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि उन्नति कारक आहे अतः ह्या वेळी इच्छा होणारी तसेच जूने कार्य पूर्ण होणारे. व्यापार क्षेत्र मधे सफळता प्राप्त होणारी तसेच नोकरी मधे उन्नति होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध रहणार तसेच धन लाभ होणार आणि वांछित कार्य सफळ होणार. काही तरी प्रवास आणि प्रवास पासून फायदे होणार कुटुम्ब मधे परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार अतः परिश्रम आणि योग्यता पासून इच्छित परिणाम प्राप्त करणारे. ह्या वेळी प्रभाव युध माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार जूने कार्य पण पूर्ण होणारे. समाजातीळ सहयोग आणि सम्मान प्राप्त होणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे उन्नति होणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. ह्या वेळी आवास सम्बन्धातीळ परिवर्तन होउ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे जोखम कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे.

फलादेश - 2034

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

केतु ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 12/10/2034 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु द्वादश भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु प्रथम भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनकूल रहणार अतः साहस आणि उत्साह उत्पन्न होणार. विशेष कार्य मधे सफळता अर्जित करणारे व्यापार मधे सफळता आणि लाभ भेंटणार. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. काही तरी प्रवास आणि प्रवास पासून फायदे होणार. विशेष प्रभाव युध लोकां पासून सम्पर्क स्थापित

होणार आणि वांछित सहयोग भेंटणार कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार आणि सहयोग भेंटणार पण अध्ययन किंवा धर्म कार्य मधे श्रद्धा आणि चि कम होणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः सगड़े उन्नती आणि लाभ होणार. मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर संबन्ध स्थापित होणार आणि वांछित लाभ होणार. शुभ कार्य आत्म विश्वास पासून सफळ होणार व्यापार मधे लाभ होणार नोकरी मधे उन्नती होणारी कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी आणि परस्पर सहयोग भेंटणार. फायदे ची प्रवास होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2035

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने शनी यंदा सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ. यंदा व्यापारात किंवा नोकरीत इच्छित सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात व्यापारात आश्चर्यजनक व उन्नतीकारक परिवर्तन होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर नोकरीत महत्वाचे पद मिळेळ. ह्या काळात ळाभदायक प्रवास सम्पन्न काराळ. ज्यामुळे तुमचा प्रभाव वाढेळ. ह्या काळात शत्रूळा पराजित कराळ. एरवाद्या स्पर्धात्मक परीक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभ असल्याने क्वचित्प्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमी जाणवेळ पण कष्ट व बुधीच्या जोरावर तुम्ही इच्छित सफळता मिळावाळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

केतु ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 18/09/2035 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु प्रथम भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहे। पण शनि तृतीय भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार. नौकरी मधे पदोन्नति आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. आर्थिक स्थिति

चांगली रहणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती रहणारी आणि सहयोग प्रदान करणारे तसेच कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातील सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धी होणारी आणि समाज प्रभावित होणार. अतः आपण समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः ह्या वेळी कुटुम्ब सुख शान्ती तसेच समृद्धी उत्तम रहणारी आणि परस्पर सहयोग पण रहणार. असे समय वर व्यापार अनुकूल रहणार तसेच व्यापार मधे लाभ होणार. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार मित्र समय–समय वर सहयोग देणारे. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार तसेच भविष्य साठी नवीन प्रयोजने करणारे. अतः समय सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(24/10/2013 - 24/10/2030)

बुध की महादशा 24/10/2013 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 24/10/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(08/11/2025 - 14/02/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 24/10/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 08/11/2025 को प्रारंभ होकर 14/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न, सफल और धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। संतानसुख रहेगा। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। विवाह हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है। व्यापार में लाभ और विस्तार की संभावना है। धनी बनेंगे। यात्रा हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, कार्यक्षमता उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी को कार्यों और व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी होंगे; पारिवारिक सुख मिलेगा। माता सफल और प्रसिद्ध होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन का संचय, प्रभावशाली मित्र, यात्रा, सौभाग्य और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपकी संतान सौभाग्यशाली होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पिता से सकारात्मक संबंध होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को वर्तमान में किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों के धनार्जन में वृद्धि होगी; यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(14/02/2028 - 24/10/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 24/10/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 14/02/2028 को प्रारंभ होकर 24/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। सभी कार्य सुचारु रूप से दक्षता से करेंगे। लेखन, विज्ञान और संचार माध्यम से संबंधित कार्यों में लिए समय शुभ है। स्पर्धियों पर विजय होगी। पंचम भाव पर शनि की दृष्टि के कारण शिक्षा उत्तम होगी, प्रोन्नति होगी, उच्चपद मिलेगा, धनागम होगा, समृद्ध बनेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है; संतान सुखकारी होगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे, धनार्जन उत्तम होगा, यात्रा होगी, समाज में सफलता मिलेगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, धनागम होगा, समृद्ध बनेंगे। माता

महादशा :- केतु
(24/10/2030 - 24/10/2037)

केतु की महादशा को 24/10/2030 आरम्भ और 24/10/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की

सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(24/10/2030 - 22/03/2031)

आपके लिए केतु महादशा 24/10/2030 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/10/2030 को प्रारंभ होकर 22/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

योग

अमलयोग

चन्द्राव्द्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19–2

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सत्कीर्तियुक्त योग

लाभेशे कर्मभावस्थे कर्मेशे बलसंयुते।
देवेन्द्रगुरुणा दृष्टे सत्कीर्त्तिसहितो भवेत्।।
।। बृहद् पाराशरहोराशास्त्र ।। अ. 12/

यदि जन्मकुण्डली में लाभ का स्वामी कर्मस्थ हो तथा कर्मेश बली हो तथा उस पर गुरु से दृष्ट हो तो जातक सत्कीर्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सत्कर्मी प्राणी होकर सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–41

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–47

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–14

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.–8 ।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–1

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,बुध,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि–अ.–5/श्लो.–42

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23 ।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–4

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–6

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.–97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,केतु,सूर्य,बुध योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।